WWW.MJVS.ORG

MANAV JEEVAN VIKAS SAMITI
MJVS
SINCE 2000

मानव जीवन विकास समिति

25 वर्ष

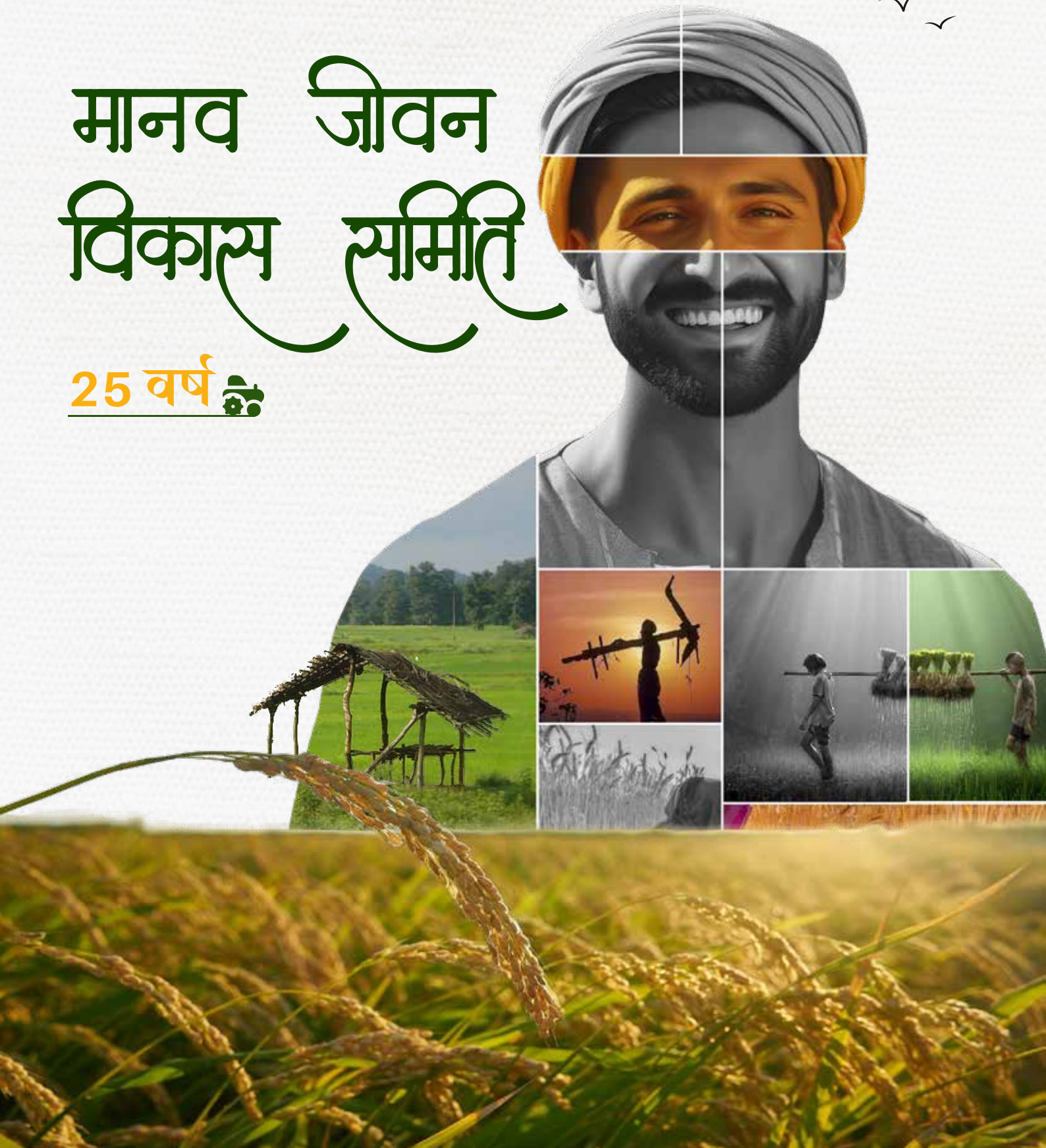

कॉपीराइट © 2025
मानव जीवन विकास समिति (MJVS)
सर्वाधिकार सुरक्षित

इस रिपोर्ट का कोई भी हिस्सा बिना पूर्व लिखित अनुमति के प्रतिलिपि, पुनरुत्पादित, संग्रहित या किसी भी रूप में—इलेक्ट्रॉनिक, मैकेनिकल, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग या अन्य माध्यमों से—प्रेषित नहीं किया जा सकता, सिवाय उन स्थितियों के जो लागू कॉपीराइट कानूनों के अंतर्गत अनुमत हों।

इस रिपोर्ट में प्रस्तुत विचार, अंतर्दृष्टि, तथ्य और केस स्टडीज़ क्षेत्रीय अनुभवों और समुदाय-आधारित पहलों पर आधारित हैं। इस दस्तावेज़ के उपयोग से उत्पन्न किसी भी अनपेक्षित त्रुटि या परिणाम के लिए MJVS ज़िम्मेदार नहीं होगा।

रिपोर्ट संकलन और सामग्री: मानव जीवन विकास समिति (MJVS)
डिज़ाइन एवं लेआउट: Vistaar WebX

प्रकाशन वर्ष 2025
कटनी, मध्य प्रदेश
www.mjvs.org

मानव जीवन विकास समिति

पच्चीस वर्षों की यात्रा, संस्थागत कार्य एवं प्रभाव रिपोर्ट
2000 से 2025

ग्रामीण और आदिवासी समुदायों के साथ
भूमि, जल, आजीविका और अधिकार की साझा यात्रा

प्रस्तुति
मानव जीवन विकास समिति

रिपोर्ट डिज़ाइन एवं लेआउट
विस्तार वेबएक्स

कटनी मध्य प्रदेश
2025

“
ख़ुद को पाने का सबसे अच्छा तरीक़ा है दूसरों की सेवा में ख़ुद को खो देना।
- महात्मा गांधी

विषय-सूची

मानव जीवन विकास समिति : अवधारणा, परिदृश एवं उद्देश्य 06

संस्था का स्ट्रक्चर 08

पिछले पच्चीस वर्षों की यात्रा 14

संस्था के प्रमुख कार्यक्रम 16

पच्चीस सालों में हुए कार्यों के परिणाम एवं प्रभाव 32

बदलाव की ओर 36

सफलता की कहानियाँ 38

पुरस्कार एवं सम्मान 54

कार्यकर्त्ताओं के अनुभव और कहानियाँ 58

मीडिया कवरेज 65

आभार 67

मुझे यह जानकर ख़ुशी हुई कि मानव जीवन विकास समिति (MJVS) ने अपने 25 साल पूरे कर लिए हैं। 25 साल का मील का पत्थर पार करना किसी भी संस्था के सफ़र में एक अहम पल होता है। मैं उन अनगिनत कार्यकर्त्ताओं और सामुदायिक नेताओं की अच्छी तरह कल्पना कर सकता हूँ जिन्होंने MJVS को बनाने में बिना थके योगदान दिया है। किसी भी संस्था का विकास और विस्तार उसके सदस्यों के प्रतिबद्धता और कड़ी मेहनत पर निर्भर करता है और मैं इस मौक़े पर समिति और पूरी टीम को उसकी विश्वसनीयता, लोकप्रियता और दृश्यता के मौजूदा स्तर तक पहुँचाने के लिए बधाई देता हूँ।

MJVS लगातार दो स्तरों पर ज़मीनी और राष्ट्रीय स्तर पर सक्रिय रहा है। इसकी सबसे बड़ी ताक़त गाँवों में पिछड़े समुदायों के बीच इसकी गहरी मौजूदगी है। पिछले कुछ सालों में, MJVS ने लोगों को सामाजिक और आर्थिक रूप से मज़बूत बनाने में अहम भूमिका निभाई है। पानी बचाने और जैविक खेती में इसके शुरुआती काम को नागरिक समाज संगठनों के साथ-साथ सरकारी संस्थाओं से भी पहचान मिली है।

एक और बड़ी कामयाबी MJVS का राष्ट्रीय और वैश्विक नेटवर्किंग में योगदान रहा है। इन रिश्ते से संस्था को अलग-अलग इलाक़ों में अलग-अलग प्रयोग और पहल से सीखने का मौक़ा मिला है। किसी भी संस्था के लिए जो कई तरह से आगे बढ़ना चाहता है, ऐसी आपसी सीख ज़रूरी है। MJVS से जुड़े सभी लोग पिछले 25 सालों में इसकी कामयाबियों पर गर्व कर सकते हैं। मुझे पूरी उम्मीद है कि लीडरशिप और टीम की एकजुटता और प्रतिबद्धता के साथ काम करती रहेगी, और कई नई पहल शुरू करेगी जो आख़िरकार हमारे समाज को ग़रीबी और उससे जुड़ी चुनौतियों से आज़ाद करने में मदद कर सकती हैं। मुझे यक़ीन है कि MJVS इस रोल को पूरी लगन से निभाता रहेगा और एक प्रेरणा देने वाला उदाहरण बनेगा।

शुभकामनाओं के साथ,
राजगोपाल पी. वी.

आप सभी के सामने MJVS के बारे में दो शब्द लिखने व बताने की कोशिश कर रहा हूँ। क्योंकि अपने हाथो से किये गये काम को बताना बड़ा मुश्किल होता है फिर भी आपको बताना चाहूँगा। जैसे किसी पौधे को रोपण करने के बाद बड़ा होकर पेड़ बनता है तो छाया और फल देता है उसी तरह से मेरा MJVS के साथ जुड़ाव रहा। लेकिन फल को खाने का नहीं बल्कि उस समाज के लिए और बड़े दिल से तैयार होना है जिससे अधिक से अधिक लोगों तक लाभ पहुँच सके। यह कि जब आप बड़े दिल व सोच के साथ किसी मंज़िल को ले जाने के लिए तैयार होते है तो उसमे कई दिवारें मिलकर मंज़िल और कई टहनियों को मिलाकर पौधे से पेड़ बनता है। यही बात व नियम मेरे ज़िन्दगी के लिए है, मेरे लिए इससे अलग करके सोचना बिलकुल वैसे ही है जैसे पानी से निकलकर मछली को होता है।

मुझे अच्छा लगता है जब वह सुदूर गाँव का ग़रीब आदमी कहता है कि MJVS के कारण हमारी ज़िन्दगी मे बदलाव आया है, शासन की योजनाओं तक हमारी पहुँच बन रही है और घरों मे हमारे बच्चों के खाने के लिए शुद्ध अनाज आ रहा है मेरे लिए और ही अच्छा वह क्षण होता है जब MJVS की पूरी टीम एक साथ जुटती है और एक दूसरे के लिए किये हुए कार्यों से सीखती है और अपने काम मे और तीखापन लाती है। आज जो आप MJVS की तस्वीर देख रहे है इसे उल्टा कर देखिए की आज से 25 वर्ष पहले कैसे रही होगी जो गाँव व रोड से भी दूर है बिजौरी आज भी गाँव है जहाँ पर गाँव की परम्परा रहन सहन आदि दिखाई देता है।

मै उन सभी का दिल से धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने MJVS को यहाँ तक लाने के लिए धन, मन, साहस, समय, सहयोग और ताक़त दी है। मै उन सभी छोटे बड़े कार्यकर्ता साथियों को धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने गाँव मे समाज के बीच आजीविका व अन्य विषयों पर काम किया। जिन साथीयों ने उसे काग़ज़ मे लिखा और जिन्होने उसे आज के कम्प्यूटर सिस्टम मे डाला और प्रचार किया और भी सभी साथी जो एक - एक पैसे का हिसाब रखते हैं और जिन्होने यहाँ आने - जाने वालों का चाय नास्ता व यहाँ की साफ़ सफ़ाई का ध्यान रखा सभी धन्यवाद के पात्र है।

मै अपने राजगोपाल जी (राजा जी) को नहीं भूल सकता जो मुझे 1987 से यहां तक लाए, तैयार किये, बोलना सिखाया, काम करना सिखाया मुझे वह मई माह का महीना अच्छी तरह से याद है जब दमोह के सगौनी मे युवा शिविर के समय 7 दिन मे सिखाया था मैं वह दिन भी नहीं भुला पा रहा जब मै मुम्बई मे था तो राजा जी ने मुझे 1998 मे मझगवाँ बिजौरी बुलाया और MJVS का गठन किया और आज सबके सामने है।

शुभकामनाओं के साथ,
निर्भय सिंह
सचिव
मानव जीवन विकास समिति

"

उत्कृष्टता आकस्मिक नहीं होती, यह आदत से आती है।

- डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

01 मानव जीवन विकास समिति
(अवधारणा, परिदृश्य एवं उद्देश्य)

मानव जीवन विकास समिति (एमजेवीएस) की शुरुआत एक छोटे से वादे के साथ हुई, एक ऐसा वादा, जिसे किसी भी गाँव के व्यक्ति को बड़ी आसानी से, एक पेड़ के नीचे बैठा कर समझाया जा सकता था। यह वादा, बस इतनी-सी बात थी कि 'हर इंसान को बिना डर, बिना भूख, बिना किसी भेदभाव और सम्मान के साथ जीने का हक है।' पिछले पच्चीस सालों से हम इस वादे को निभाने में सक्रीय हैं।

हम आदिवासियों और ग्रामीण परिवारों के खेतों-खलिहानों में उनके साथ क़दम-से-क़दम मिलाकर चले। हम उनकी ज़मीन का हक दिलवाने, उनके साथ सरकारी विभागों की लम्बी-लम्बी लाइनों में डटे रहे। उनके साथ तालाबों की गहराइयों को हमारे हाथों ने भी नापा है। हमने जैविक खाद और स्थानीय संसाधनों से खेत की उस मिट्टी को भी वापस ताक़तवर होते देखा है, जो रासायनिक खाद के अधिक उपयोग से कमज़ोर हो चुकी थी। किसी महिला को अपनी ज़मीन का पट्टा मिलना हो या ग्रामसभा में नौजावानों द्वारा आत्मविश्वास से सवाल पूछना हो, अच्छे से सहेजे गए पानी से बढ़िया फ़सल मिली हो या किसी गर्भवती को फ़ोन पर ही स्वास्थ्य बिना किसी इंतज़ार के सही जानकारी मिलना हो, ऐसी छोटी-छोटी जीतों के उत्सव भी हमने बड़ी धूम-धाम से मनाए।

ऐसा नहीं है कि इन पच्चीस सालों का यह सफ़र बहुत आसान रहा, ढेरों मुश्किलों का सामना हमें करना पड़ा; कभी काग़ज़ी कामों में बहुत देरी हुई, तो कभी बे-मौसम बरसात ने पूरी फ़सल ख़राब कर दी, कभी सरकारी नीतियों में होने वाले बदलाव जो हमारी योजनाओं से भी तेज़ चलते, तो कभी परिवार जो तुरन्त की ज़रूरत और लम्बे समय के बदलाव के बीच उलझे रहते, लेकिन हर बार जब मुश्किलों ने हमें घेरा तब हमने अपने आसपास देखा तो हमें हमारे साथी दिखाई दिए, जैसे-कि कुछ सरकारी विभाग जिन्होंने बड़े धैर्य के साथ गाँव की टीम को रास्ता दिखाया, हमें कुछ सामाजिक संस्था दिखाई दिए जिन्होंने अपनी सीख-समझ, कौशल और प्रशिक्षण हमसे साझा किये। ऐसे लोग और संस्थाएँ मिलीं जिन्होंने हम पर भरोसा कर हमारी आर्थिक मदद की। और सबसे महत्वपूर्ण हमारे ज़मीनी कार्यकर्त्ता जो सूरज के उगने से पहले क्षेत्र के लिए निकल पड़ते और देर रात घर लौटते, इन सभी ने हमारी हर मुश्किल को आसान किया और हमें कमज़ोर नहीं पड़ने दिया। इस सफ़र में अगर हम गांधी जी के शान्ति, समानता और सहयोग जैसे मूल्यों को ज़िन्दा रख पाएँ हैं तो उसका पूरा श्रेय उन ग्रामीणों और कार्यकर्त्ताओं को जाता है जो इन मूल्यों को अपनी जीवनशैली में शामिल किए हुए हैं। ये ही मूल्य हमारी बुनियाद है। ये ही लोग, हमारी ताक़त हैं, हमारा जज़्बा हैं और ये ही MJVS है। और यही हमारी यात्रा है... जो अब भी जारी है...

"
यदि सूरज की तरह चमकना है, तो पहले सूरज की तरह जलना सीखो।

- डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

02 संस्था का **स्ट्रक्चर**

संस्था के बारे मे

मानव जीवन विकास समिति एक सामाजिक गैर सरकारी संगठन है, जिसका गठन सन् 2000 मे किया गया था। अपने उद्देश्यों के प्रति सचेत रहकर, यह संगठन पिछले 25 वर्षों से ग्रामीण क्षेत्रों के वंचित समुदायों के लिए अथक रूप से कार्य कर रहा है। कार्यालय के सदस्यों, क्षेत्र के कार्यकर्ताओं और ग्रामीण समुदायों के लिए क्षमता निर्माण प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करके एवं जैविक खेती को बढ़ावा देकर और उनके लिए स्थायी आजीविका के साधनों का निर्माण कर संस्था ने आम आदमी को मुख्यधारा मे लाने का निरंतर प्रयास किया है।

समिति का कार्यालय मध्यप्रदेश के कटनी जिले के बड़वारा तहसील के बिजौरी (मझगवां) गांव मे 30 एकड़ के खूबसूरत परिसर मे स्थित है। समिति के पास एक छोटा सा आफिस है जहां पर 10 से 15 लोग बैठकर काम कर रहे है। इसके अलावा 2 प्रशिक्षण हाल, 1 गेस्ट हाउस, 1 पुस्तकालय, किचिन, आवासीय परिसर है जिसमे 60 लोगों को रुकने की व्यवस्था है। 8 एकड़ जमीन मे जैविक खेती की जाती है, विभिन्न प्रकार के डिमांस्ट्रेशन भी है जहां पर आसपास के किसान आकर देखते और समझते है। यहां पर लगे 550 किस्मों के पौधे से परिसर की शोभा और अधिक बढ़ जाती है।

संस्था का विजन और मिशन

युवाओं और महिलाओं की शक्ति को संगठित करके तथा वैकल्पिक विकल्पों के अध्ययन और विश्लेषण के आधार पर नीतियों को प्रभावित करके ग्रामीण क्षेत्रों मे अहिंसक अर्थव्यवस्था का विकास करना।

हमारा विजन

गरीमामयी जीवन जीने के प्राकृतिक संसाधनों के प्रबंधन के लिए समुदाय की क्षमता को बढ़ाकर एक अहिंसक रूप से समावेशी समाज का निर्माण करना।

हमारा लक्ष्य

जैविक खेती के माध्यम से एक वैकल्पिक आर्थिक मॉडल के रूप मे अहिंसक अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देना, प्राकृतिक संसाधनों के इष्टम प्रबंधन के लिए ग़रीबी उन्मूलन और सामुदायिक आत्मनिर्भरता की ओर नेतृत्व करना।

संस्था के प्रमुख उद्देश्य

- विज्ञान, शिक्षा, साहित्य या ललित कलाओं की अभिवृद्धि के लिए प्रयास करना।
- सामाजिक कल्याण के समानता के लिए।
- परिवेश एवं पर्यावरण को स्वस्थ्य बनाये रखने के लिए और प्रदूषण के विरुद्ध जागरूकता का फैलाव।
- महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देना एवं महिला हिंसा व नशा मुक्ति के विरुद्ध जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन।

- बच्चों के भली-भांति पोषण वृद्धि ज्ञानार्जन क्रियाशीलता खेल कूद एवं आनंद उत्सव के अनुकूल परिवेश की रचना का प्रयास करना।
- प्राकृतिक आपदा एवं मानव महामारी की रोकथाम हेतु प्रयास करना तथा उचित जगह एवं महौल उपलब्ध कराना।
- जैविक खेती, जड़ी बूटी के संग्रह एवं संवर्धन के कार्यक्रम का आयोजन करना।
- खादी और ग्राम-उद्योग रीति नीति और कार्य प्रणाली के अनुरूप कार्य करना। खादी बुनाई व चर्खों का उपयोग हेतु प्रशिक्षण देना।
- प्राकृतिक संसाधन, जल संरक्षण, ऊर्जा संरक्षण व पर्यावरण के प्रति जागरूकता फैलाना।
- स्थानीय स्थापत्य कला को बढ़ावा देने हेतु प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन करना।
- विज्ञान के प्रचार-प्रसार हेतु कार्य करना तथा वैज्ञानिक गतिविधियों से जन साधारण को अवगत कराना।
- समाज के समग्र विकास के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य, पेयजल, जल संरक्षण, सिंचाई, भूमि सुधार प्रकृति संपदा, वन्य जीव संरक्षण, वृक्षारोपण के तहत जागरूकता के कार्यक्रम करना।
- ग्रामीण विकास हेतु शिक्षण, हस्तशिल्प कलाकारों को प्रशिक्षण व लोक कल्याणकारी कार्यक्रमों का आयोजन करना।
- ग्राम स्वराज एवं पंचायती राज के अनुकूल ग्राम उत्थान के लिए कार्य करना।
- औषधीय पौधों की खेती को प्रोत्साहित करना एवं प्रशिक्षण शिविरों के साथ प्रतियोगिताओं का आयोजन करना।
- ग्रामीण पर्यटन गतिविधियों को बढ़ावा देना।
- समाज के बौद्धिक एवं नैतिक विकास हेतु वाचनालय तथा पुस्तकालयों की स्थापना एवं संचालन करना।
- पशुपालन को बढ़ावा देने हेतु गौषाला का संचालन व व्यवस्था हेतु प्रशिक्षणों का आयोजन करना।
- शासकीय योजनाओं का प्रचार-प्रसार करना तथा उनके कार्यान्वयन के लिए प्रशिक्षण का आयोजन करना। लिए सरकारी विभागों और नागरिक समाज के साथ सहयोग करना।

हमारे 10 स्तम्भ

- आजीविका आधारित शिक्षा।
- लोक कल्याण।
- स्थानीय लोक कला एवं संस्कृति।
- शोषण मुक्त समाज।
- आपसी सहयोग सामंजस्य।
- सामाजिक समानता और एकता।
- स्थायी कृषि विकास।
- सुरक्षित एवं स्वस्थ पर्यावरण।
- लोक स्वराज।
- अहिंसक समाज।

संचालन

एमजेवीएस का संचालन कटनी ज़िले के बिजौरी गाँव में तीस एकड़ में फैले एक प्रशिक्षण और संसाधन केन्द्र से होता है। यह परिसर सिर्फ़ एक इमारत नहीं बल्कि एक चलती-फिरती पाठशाला है। यहाँ, कहीं आपको श्री-धान की कतारें दिखाई देंगी तो कहीं, जैव-इनपुट शेड से नीम और गुड़ की भीनी-भीनी ख़ुशबू आपको अपनी ओर खींच लेगी। एक सौर ऊर्जा से चलने वाला सेटअप भी है जिससे हॉल में बिजली आती है। इस परिसर में सम्मेलन कक्ष, कक्षाएँ, हर्बल नर्सरी, सौर ऊर्जा का सिस्टम और कृषि प्रदर्शन इकाइयाँ तो हैं ही, एक छात्रावास भी है जो दूर-दराज़ से प्रशिक्षण लेने आए हुए किसानों का बसेरा है। लगभग 70 लोगों के लिए आवासीय व्यवस्था भी है। यह परिसर दरअसल एक केन्द्र बिंदु है जहाँ से हम ग्रामीण युवाओं, महिलाओं और किसानों को उन कार्यक्रमों के ज़रिए मदद करते हैं जो ज़मीनी स्तर पर व्यावहारिक लगते हैं जैसे - जल और मिट्टी का प्रबंधन, जैविक और कीटनाशक-रहित कृषि की ओर रुझान वन अधिकार अधिनियम 2006 का दावा, सूक्ष्म-उद्यमों का निर्माण, महिला नेतृत्व को मज़बूत करना, डिजिटल और व्यावसायिक कौशल सिखाना, ग्रामीण पर्यटन के साथ प्रयोग, राहत और कल्याणकारी गतिविधियाँ चलाना, और मूल रूप से, स्थानीय शासन को समावेशी और उत्तरदायी बनाना। यह प्रशिक्षण केंद्र 14 से अधिक ज़िलों के 1,600 से अधिक गाँवों में फैले क्षेत्रीय कार्यालयों, स्वयंसेवकों और सहयोगी संगठनों के नेटवर्क का केंद्र बिंदु है।

संस्था का संचालन समर्पित सदस्यों और कार्यात्मक टीमों के एक बोर्ड द्वारा होता है जो कार्यक्रम डिज़ाइन, क्षेत्रीय समन्वय, निगरानी और मूल्यांकन, और वित्तीय प्रबंधन जैसे कार्यों पर केन्द्रित होता है। संस्था द्वारा अपनी पहुँच और पारदर्शिता को विस्तार देने के लिए लिए आधुनिक तकनीक और सोशल मीडिया का भी भरपूर इस्तेमाल किया जाता है।

मानव जीवन विकास समिति

संगठन संरचना

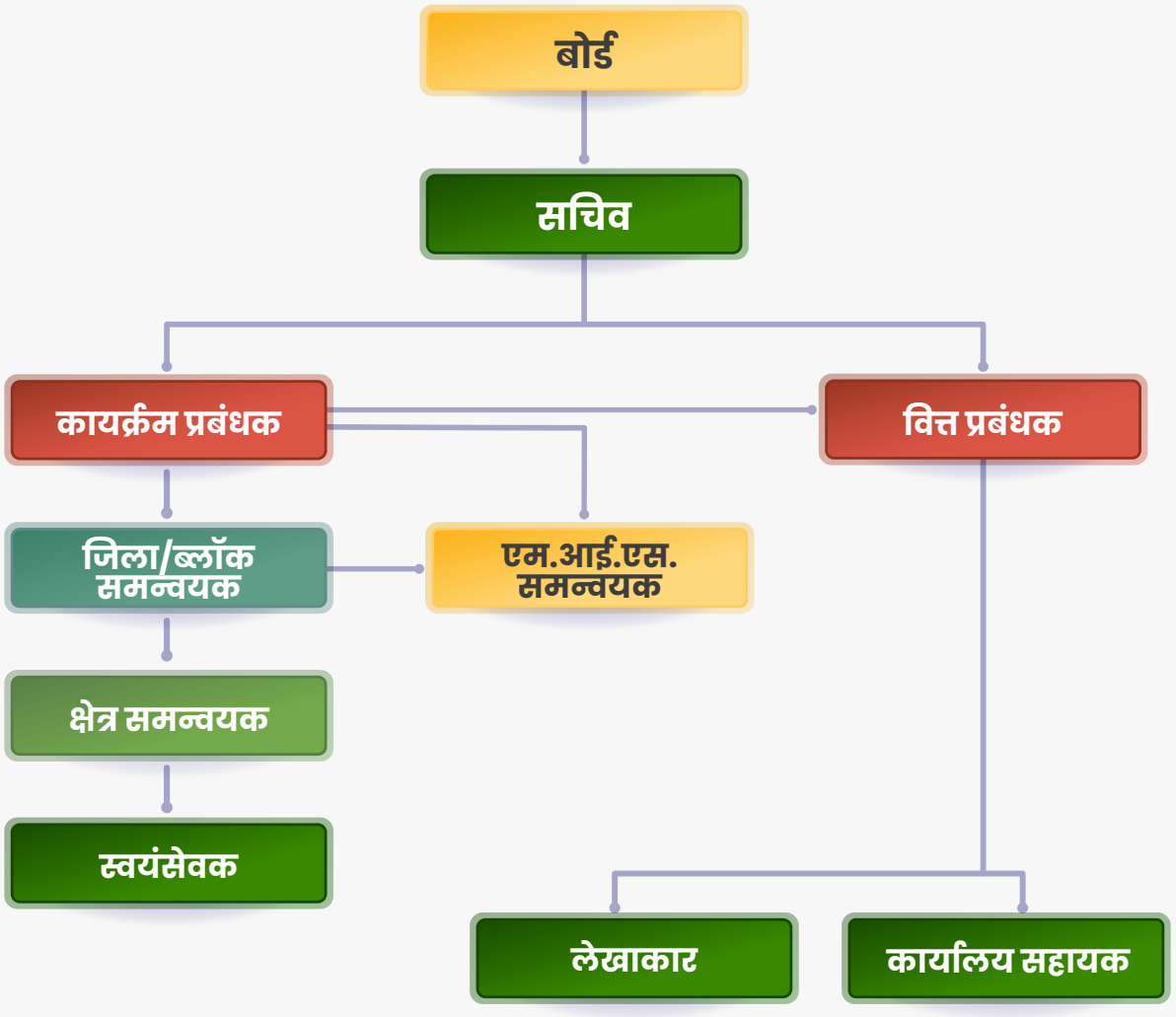

प्रशासन संरचना

बोर्ड द्वारा प्रगति की समीक्षा, रणनीतियों को मंज़ूरी देने और पारदर्शी जवाबदेही सुनिश्चित करने के लिए नियमित रूप से बैठकें आयोजित की जाती हैं। बोर्ड के अंतर्गत समितियाँ वित्त, कार्यक्रम निगरानी, लेखा-जोखा और मानव संसाधन का प्रबंधन करती हैं। बोर्ड का नेतृत्व एमजेवीएस के ज़मीनी स्तर पर ध्यान केंद्रित रखने और इसके भौगोलिक और विषयगत प्रभाव को व्यापक बनाने में महत्वपूर्ण रहा है।

समिति के पदाधिकारी

श्री बद्री नारायण नरडिया
अध्यक्ष

श्रीमती शोभा शर्मा तिवारी
उपाध्यक्ष

श्री निर्भय सिंह
सचिव

श्रीमती मिलन धुर्वे
संयुक्त सचिव

श्रीमती प्रभा सिंह
कोषाध्यक्ष

श्री मोहनदास नागवानी
सदस्य

श्रीमती हरि बाई गौंड
सदस्य

श्री राजगोपाल पी.व्ही.
सदस्य

श्री अतुल निधान सिंह चौहान
सदस्य

श्री संतोष सिंह
सदस्य

श्रीमती सुशीला उपाध्याय
सदस्य

श्री ओंकार सिंह गौंड
सदस्य

श्री तम्मा गड़ारी
सदस्य

"
जीवन में जोखिम लो। जीत गए तो नेतृत्व करोगे, हार गए तो मार्गदर्शन करोगे।

– स्वामी विवेकानंद

03 पिछले पच्चीस वर्षों की यात्रा

मध्यप्रदेश एवं अन्य राज्यों में हाशिए पर पड़ी जातियों और आदिवासी समुदायों के आर्थिक, सामाजिक और स्व-शासन सशक्तिकरण के उद्देश्य के साथ एमजेवीएस की यात्रा सन 2000 में शुरू हुई। बिजौरी गाँव में कृषि और प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन पर केंद्रित 30 एकड़ के प्रशिक्षण केंद्र की स्थापना से लेकर, संस्था ने शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण संरक्षण और ग्रामीण पर्यटन में व्यापक कार्यक्रमों को शामिल करते हुए लगातार विकास किया।

इन 25 सालों में संस्था ने भौगोलिक और विषयानुसार अपनी पहुँच का विस्तार किया है जिसमें हज़ारों किसान, ख़ासकर बैगा, गोंड और कोल जैसी जनजातियाँ और दलित समुदाय शामिल हैं। इस प्रक्रिया ने क्षमता निर्माण, पारंपरिक ज्ञान के संरक्षण और जैविक कृषि पद्धतियों को बढ़ावा देने पर ज़ोर दिया। टीम की युवा-उन्मुख परियोजनाओं ने बुंदेलखंड-बघेलखंड और महाकौशल जैसे क्षेत्रों में गहन पहुँच शुरू की, जिससे स्थानीय, राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर दृश्यता और प्रभाव बढ़ा। इस दौरान संस्था द्वारा लगातार, नेतृत्व और स्वयंसेवा के बल पर राष्ट्रीय शिविरों, कार्यशालाओं और क्षमता निर्माण गतिविधियों का भी आयोजन किया गया।

इस तरह ये यह यात्रा अलग-अलग प्रयासों से लेकर सामाजिक समानता, पर्यावरणीय स्थिरता, सांस्कृतिक विरासत, ग्रामीण उद्यम और सामुदायिक शासन को संबोधित करने वाले कार्यक्रमों के एक जीवंत नेटवर्क तक के परिवर्तन को रेखांकित करती है। संस्था द्वारा चलाए गए ये जागरूकता अभियान एवं डिजिटल पहुँच के कार्यक्रम, पारदर्शिता और समावेशिता को आसान बनाते है, जिससे ग्रामीण आबादी अपने अधिकारों को जान पाती है, उन पर दावा कर पाती है और सरकारी योजनाओं तक अधिक प्रभावी ढंग से पहुँच पाती है।

कार्यदिशा

हम निरंतर काम करते रहने और सभी लोगों को शामिल करने और सभी को नेतृत्व करने के मौक़े उपलब्ध कराने में भरोसा रखते हैं। सबसे पहले हम ग्रामीणों की क्षमता विकसित करते हैं, ताकि सबकुछ गाँव में ही किया जा सके। हम केवल प्रक्रिया समझाते नहीं है बल्कि उसे करके दिखाते भी हैं। बहुत सारी नीतियाँ और योजनाएँ समुदायों तक नहीं पहुँच पाती जबकि बहुत से समुदाय पहले से ही उन योजनाओं की पात्रता रखते हैं। हम बाज़ारों और योजनाओं को उनके उचित पात्रों से जोड़ने का प्रयास करते हैं। ऐसा करते हुए हमने पिछले सालों में मध्य प्रदेश और पड़ोसी राज्यों के करीबन 1600+ से ज़्यादा गाँवों को जोड़ा है। साथ ही इस दौरान हमने 115 बीज बैंकों की स्थापना की, 120 से भी ज़्यादा जल-संरचनाएं स्थापित कीं, सैकड़ों स्व-सहायता समूहों को अपने पैरों पर खड़ा होने में मदद की और हज़ारों लोगों को व्यवसायिक कौशल प्रदान किया है। हम ग्राम सभाओं के संचालन को बेहतर करने में भी मदद करते हैं ताकि बजट, प्राथमिकताएँ और लाभ दूर की बातें न हों, बल्कि रोज़मर्रा के फ़ैसले हों। भविष्य में, हम सामुदायिक स्वामित्व को मज़बूत करने, स्थानीय लय के अनुकूल वितरण की रूपरेखा तैयार करने और मूल्य-प्राथमिक ग्रामीण अर्थव्यवस्था में सबकुछ स्थापित करने के लिए प्रतिबद्ध हैं, जो स्थायी आजीविका और प्राकृतिक खेती को सम्मान और महत्त्व देती है।

“

सारी शक्ति तुम्हारे भीतर है। तुम कुछ भी कर सकते हो।

- स्वामी विवेकानंद

04 संस्था के **प्रमुख कार्यक्रम**

कृषि और प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन

मानव जीवन विकास समिति ग्रामीण विकास और आजीविका के आधार के रूप में प्राकृतिक संसाधनों के सतत प्रबंधन को प्राथमिकता देती है। संस्था द्वारा जल संरक्षण, मृदा उर्वरता, जैविक कृषि इनपुट, जैव विविधता संरक्षण, वनोपज का प्रबंधन और जलवायु परिवर्तन को ध्यान में रखकर कार्यक्रम तैयार किये जाते हैं।

जल एवं मृदा संरक्षण

एमजेवीएस द्वारा स्थानीय समुदायों की सक्रिय भागीदारी से कृषि तालाबों, चेकडैम, कंटूर ट्रेंचिंग और कुओं के पुनरुद्धार एवं निर्माण में सहायता प्रदान की जाती है। ये उपाय वर्षा जल को बनाए रखने, भूजल पुनर्भरण में सुधार करने और कम वर्षा वाले मौसम में सिंचाई की उपलब्धता सुनिश्चित करने तथा फसल की पैदावार और पारिस्थितिक संतुलन को बढ़ाने में मदद करते हैं।

जैविक और प्राकृतिक कृषि पद्धतियाँ

यह पद्धति चावल गहनीकरण प्रणाली (एसआरआई), देशी और उन्नत क़िस्मों के लिए बीज बैंकों, वर्मीकंपोस्टिंग और जैविक खाद एवं कीटनाशकों के निर्माण को बढ़ावा देता है। ये लागत-प्रभावी तरीके हैं जो रासायनिक निर्भरता को कम करते हैं, मृदा स्वास्थ्य में सुधार करते हैं और फ़सल एवं मिट्टी के लचीलेपन को बढ़ाते हैं।

बीज बैंक और जैव-उत्पाद केंद्र

एमजेवीएस द्वारा ऐसे बीज बैंकों का रखरखाव किया जाता है, जो जैव-विविधता और जलवायु अनुकूलन के लिए महत्वपूर्ण पारंपरिक बीज की क़िस्मों को संरक्षित करते हैं। जैव-उत्पाद केंद्र, जैविक खाद और प्राकृतिक कीटनाशकों का उत्पादन करता है और किसानों तथा स्वयं सहायता समूहों को स्थायी सामग्री उपलब्ध कराता है।

जैव विविधता एवं वन संरक्षण

वन अधिकार समितियों और स्थानीय समुदायों के सहयोग से देशी वृक्षों, औषधीय जड़ी-बूटियों और विविध कृषि-वानिकी प्रजातियों का संरक्षण और पुनर्जनन सम्भव होता है। एमजेवीएस द्वारा जैव विविधता के संरक्षण-लाभों और सामाजिक-आर्थिक मूल्य पर ज़ोर देते हुए जागरूकता अभियान चलाया जाता है।

प्रभाव और परिणाम

- 710 सामुदायिक तालाबों का निर्माण हुआ।
- भूमि संतालीकरण एवं मेढ़बंदी से 7763 परिवार लाभान्वित हुए।
- 250 खेत-तालाबों का निर्माण हुआ।
- 210 चेक डेम तथा 308 कुओं का निर्माण हुआ।
- संरचनाओं का निर्माण दे हज़ारों हेक्टेयर भूमि को लाभ संभव हुआ।
- 21700 किसानों को जैविक कृषि का प्रशिक्षण मिला, जिससे कृषि लागत में 30-35 % की कमी आई है और उपज में 15-20% की वृद्धि हुई।
- स्थानीय बीजों को संरक्षित करने हेतु सामुदायिक बीज बैंकों की स्थापना।
- वन संरक्षण और प्राकृतिक आवास पुनर्स्थापन में सामुदायिक भागीदारी।
- प्राकृतिक कीट प्रबंधन और खाद बनाने की विधियों को अपनाने में वृद्धि।

ग्रामीण अर्थव्यवस्था और आजीविका

मानव जीवन विकास समिति, ग्रामीण समुदायों की सामाजिक-आर्थिक वास्तविकताओं के अनुरूप विविध आजीविका और आय-वर्धक अवसरों का सक्रिय रूप से समर्थन करती है। ये पहल कृषि को टिकाऊ बनाने और वैकल्पिक आय स्रोत बनाने पर केंद्रित है।

कौशल प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण

संस्था द्वारा जैविक खेती, मशरूम की खेती, खाद्य प्रसंस्करण, सिलाई, साबुन बनाने, डिटर्जेंट और मोमबत्ती बनाने में व्यावसायिक प्रशिक्षण दिया जाता है। हाशिए पर रहने वाले युवाओं और महिलाओं को स्वरोज़गार और ग्रामीण उद्यम विकास के लिए कौशल भी प्रदान किया जाता है। आय प्राप्ति में सुधार के लिए इन प्रशिक्षणों को बाज़ार से संपर्क जोड़ने में भी सहायता की जाती है।

जैविक कृषि और मूल्य संवर्धन

प्राकृतिक कृषि तकनीकों, चावल गहनीकरण प्रणाली (एसआरआई) और पोषण वाटिकाओं को बढ़ावा देने से किसानों को उत्पादकता और पोषण बढ़ाने में मदद मिलती है। एमजेवीएस द्वारा सामुदायिक प्रसंस्करण इकाइयों और विपणन रणनीतियों में प्रशिक्षण के माध्यम से कृषि उपज के मूल्य संवर्धन की सुविधा भी प्रदान की जाती है।

जैव-संसाधन केंद्र (BRC)

ये केंद्र स्व-सहायता समूहों द्वारा संचालित है ग्रामीण उद्यम हैं, जो प्राकृतिक खेती करने वाले किसानों को किफ़ायती, पर्यावरण-अनुकूल जैविक सामग्रियों की निरंतर आपूर्ति सुनिश्चित करते हैं। जिसके तहत नीमास्त्र, अग्निअस्त्र, दशपर्णी, मटका खाद, कम्पोस्ट, जीवामृत, सुपर कम्पोस्ट जैसे 14-15 जैविक मिश्रणों का उत्पादन किया जा रहा है। इस कार्य में एमजेवीएस द्वारा कृषि वैज्ञानिकों से तकनीकी मार्गदर्शन और कृषि विभाग का सहयोग लिया जा रहा है। साथ ही इन उत्पादों की ब्रांडिंग और आसपास के गाँवों में बिक्री के लिए बाज़ार भी उपलब्ध हो रहे हैं।

सरकारी योजनाओं से जुड़ाव

संस्था द्वारा किसानों की जागरूकता बढ़ाना और कृषि सब्सिडी, ऋण सुविधाओं, बीमा और सामाजिक सुरक्षा कार्यक्रमों से संबंधित सरकारी योजनाओं तक पहुँचने में सहायता की जाती है, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि लाभार्थी आजीविका के लिए उपलब्ध संसाधनों का अधिकतम उपयोग कर सकें।

मानव जीवन विकास समिति स्थानीय संस्कृति और इको-पर्यटन को शामिल करते हुए ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देती है, ताकि गाँवों के लिए आय के नए स्रोत तैयार किये जा सकें। हस्तशिल्प और सांस्कृतिक विरासत को बढ़ावा देने से कारीगरों को सशक्त बनाया जाता है और स्वदेशी ज्ञान का संरक्षण होता है।

औषधीय फसल मूल्य श्रृंखला (अश्वगंधा और हर्बल पौधे)

खाद्य फसलों से परे विविधीकरण करते हुए, एमजेवीएस ने क्षेत्रीय जैव विविधता और बाज़ार क्षमता का लाभ उठाते हुए औषधीय और हर्बल फसलों को बढ़ावा देने के लिए नाबार्ड के साथ साझेदारी की। इसके अंतर्गत धीमरखेड़ा ब्लॉक के 8 गाँवों में पायलट प्रोजेक्ट चलाए जा रहे हैं जिसमें 100 किसान 50 एकड़ में अश्वगंधा की खेती कर रहे हैं। साथ ही जैविक खेती, प्रसंस्करण, ग्रेडिंग और पैकेजिंग पर प्रशिक्षण भी दिया जा रहा है और आयुर्वेदिक फर्मों को सामूहिक ख़रीदारी के लिए किसान समूहों का गठन भी किया जा रहा है।

प्रसंस्करण इकाइयाँ

पारंपरिक अनाजों को पुनर्जीवित करने और पोषण सुरक्षा को मज़बूत करने के लिए, एमजेवीएस द्वारा भारत की "श्री अन्न" पहल के अनुरूप एक बाजरा संवर्धन कार्यक्रम शुरू किया। जिसके तहत कोदो, कुटकी और रागी के उन्नत और स्वदेशी बीजों का वितरण तथा कम लागत वाली खेती और दालों के साथ अंतर-फसल पर किसानों को प्रशिक्षण दिया जा रहा है। क्लस्टर स्तर पर छोटी बाजरा प्रसंस्करण और पैकेजिंग इकाइयों की स्थापना भी की गयी है। स्थानीय उपभोग के लिए आईसीडीएस और स्कूल भोजन कार्यक्रमों के साथ सहभागिता भी हुई।

किसान उत्पादक संगठन (एफपीओ) और बाज़ार प्रणालियाँ

छोटे किसानों की आय सुरक्षा और बाज़ार शक्ति बढ़ाने के लिए, एमजेवीएस ने किसान उत्पादक समूहों (एफपीजी) और किसान उत्पादक संगठनों (एफपीओ) जैसी सामूहिक संस्थाओं को बढ़ावा दिया। जिसमें कृषि-सामग्री की थोक में ख़रीदी के लिए किसानों को समूहों में एकजुट करना, बहीखाता पद्धति, ग्रेडिंग और मूल्य वार्ता में क्षमता निर्माण करना, सफल एफपीओ और कृषि विश्वविद्यालयों का भ्रमण तथा एसएफएसी और नाबार्ड के साथ लाइसेंस और पंजीकरण की सुविधा उपलब्ध कराने जैसी गतिविधियाँ शामिल हैं।

प्रभाव और परिणाम

- 40820 परिवार सरकारी योजनाओं से लाभान्वित हुए।
- 21700 से अधिक परिवारों द्वारा जैविक खेती अपनाई गई, जिससे स्थानीय अर्थव्यवस्था में सुधार हुआ।
- 1605 वर्मी कम्पोस्ट पिट तैयार हुए।
- 2700 नाडेप, 12500 भू-नाडेप, और 1310 अजोला पिट का निर्माण हुआ।
- 115 बीज बैंक स्थापित किये गए।
- 26 जैव उत्पादक इकाई केन्द्रों (BRC) की शुरुआत हुई।
- 5413 परिवारों को आजीविका के अवसर मिले।
- करीबन 100 परिवारों ने 25 एकड़ में तुलसी के पौधे लगाए।
- 175 परिवारों ने कुल 45 एकड़ में हल्दी के पौधे लगाए।
- 20 एकड़ में 75 परिवारों ने अदरक और 150 परिवारों के यहाँ 75 एकड़ में अश्वगंधा के पौधे लगाए गए।
- किसानों की औसत आय ₹30,000-40,000 बढ़ी।
- 1,500 से अधिक किसानों ने मिलेट की खेती अपनाकर आय में वृद्धि की।

ग्रामीण पर्यटन

मानव जीवन विकास समिति के माध्यम से ग्रामीण पर्यटन को एक वैकल्पिक आजीविका के रूप में सफलतापूर्वक मिली है जिससे स्थानीय संस्कृति, विरासत और प्राकृतिक सौंदर्य को बढ़ावा मिला है।

सामुदायिक जुड़ाव और प्रभाव

- 5 जिले के 11 गाँवों में 110 होमस्टे डेवलप कर ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा दिया जा रहा है।
- परिणामस्वरूप, ग्रामीण पर्यटन गतिविधियों में भाग लेने वाले परिवारों की औसत आय में 30-40% तक की वृद्धि देखी गयी।
- ग्रामीण पर्यटन गतिविधियों से प्राप्त राजस्व ने स्थानीय विकास निधि में योगदान दिया, जिससे गाँव की सड़कों, स्कूलों और स्वास्थ्य सुविधाओं में सुधार हुआ।

स्वास्थ्य और पोषण कार्यक्रम

इन प्रयासों में आंगनवाड़ी केंद्र का बेहतर संचालन व क्रियान्वयन शामिल है जो मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य सेवाएँ, पोषण परामर्श और प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा प्रदान करते हैं। एमजेवीएस द्वारा जन स्वास्थ्य मानकों में सुधार के लिए स्वास्थ्य जाँच और स्वच्छता अभियान भी समय-समय पर निरन्तर चलाया जता है।

आंगनवाड़ी नवीनीकरण और पोषण उन्नयन

प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल, सामुदायिक स्वास्थ्य की नींव है। एमजेवीएस ने महिला एवं बाल विकास विभाग के साथ साझेदारी में आंगनवाड़ी नवीनीकरण अभियानों की एक श्रृंखला शुरू की ताकि पुराने केंद्रों को जीवंत शिक्षण केंद्रों में बदला जा सके। जिसमें भौतिक नवीनीकरण जैसे रंग-रोगन, चित्र, स्वच्छता सुविधाएँ और सुरक्षित पेयजल। एवं पोषण सहायता जैसे तराजू, चार्ट और कम लागत वाले पोषण वाटिका की आपूर्ति और आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं का विकास निगरानी और सामुदायिक परामर्श पर प्रशिक्षण शामिल हैं।

आपदा तैयारी और आपातकालीन प्रतिक्रिया

संस्था द्वारा आपदा प्रबंधन पूर्व तैयारी प्रशिक्षण और जागरूकता अभियान आयोजित किया जाता है, जिससे समुदायों को सूखे, बाढ़ और अन्य प्राकृतिक आपदाओं के प्रभावों का बेहतर अनुमान लगाने और समय रहते उनसे बचने में मदद मिलती है।

हाशिए पर पड़े समूहों को सहायता

संस्था द्वारा विकलांग व्यक्तियों, वृद्धजनों और प्रवासी श्रमिकों के साथ काम किया जता है और यह सुनिश्चित करता है कि संकट के समय में उन्हें सामाजिक सुरक्षा योजनाओं और आजीविका सहायता पहुँचायी जा सके।

प्रभाव और परिणाम

- कटनी और दमोह जिलों में 15 आंगनवाड़ी केंद्रों को मॉडल केंद्रों के रूप में उन्नत किया गया।
- बच्चों की उपस्थिति और भागीदारी में 40% की वृद्धि हुई।
- आपातकालीन स्थिति के दौरान हज़ारों परिवारों को राहत किट वितरण किया गया।
- जागरूकता और तैयारी पहलों के माध्यम से सामुदायिक साझेदारी को बढ़ावा मिला।
- सैकड़ों गाँवों में बेहतर स्वच्छता सुविधाएँ और व्यवहार परिवर्तन का संचार हुआ।

सामाजिक समावेशिता और अधिकारों की वकालत: वन अधिकार अधिनियम

मानव जीवन विकास समिति द्वारा वन अधिकार अधिनियम (एफआरए) 2006 के कार्यान्वयन में सक्रिय रूप से सहायता प्रदान की जाती है, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि हाशिए पर रहने वाले वन-आश्रित समुदाय भूमि और संसाधनों पर अपने कानूनी अधिकार सुरक्षित रख पाएँ। आदिवासी और भूमिहीन किसानों के लिए अपनी आजीविका बनाए रखने और पारंपरिक ज्ञान को संरक्षित करने के लिए यह बहुत ही महत्वपूर्ण है।

वन अधिकार समितियाँ और क्षमता निर्माण

विभिन्न गाँवों में वन अधिकार समितियों का गठन कर, प्रशिक्षण देना संस्था का एक महतवपूर्ण कार्य है। इसके तहत समिति के सदस्यों को वन अधिकार अधिनियम के तहत आवेदन प्रक्रिया, पात्रता मानदंड और कानूनी अधिकारों के बारे में जानकारी प्रदान की जाती है। समिति के सदस्य बिचौलियों के शोषण से मुक्त होकर, दस्तावेज़ीकरण और ऑनलाइन दावा प्रस्तुत करने में समुदाय के सदस्यों की सहायता करना सीखते हैं।

ग्राम संपर्क और जागरूकता बैठकें

पुरुषों और महिलाओं के बीच वन अधिकारों के बारे में जागरूकता फैलाने के लिए नियमित रूप से ग्राम संपर्क बैठकें आयोजित की जाती हैं, जिसमें दावा-स्वामित्व में लैंगिक समानता पर ज़ोर दिया जाता है। ये सत्र जागरूकता की कमी और अधूरे दस्तावेज़ों जैसी बाधाओं का समाधान करते हैं और पात्र परिवारों को दावा दायर करने और सत्यापन चरणों का पालन करने के लिए प्रेरित करते हैं।

प्रभाव और परिणाम

- वन अधिकार अधिनियम 2006 के तहत - 2310 किसानों को 5250 एकड़ जमीन का अधिकार प्राप्त हुआ।
- सामुदायिक अधिकार के तहत 98 गांव में, 4549 एकड़ जमीन का अधिकार प्राप्त हुआ।
- वन एप मित्र पोर्टल में कुल 5765 आवेदन दर्ज किये गए।
- वन-आश्रित समुदायों के लिए कानूनी अधिकार यानी पट्टे और उपभोग अधिकार सुरक्षित किये गए।
- विस्थापन में कमी आयी और चरागाह, जलाऊ लकड़ी और लघु वनोपज तक बेहतर पहुँच सम्भव हुई।
- सामुदायिक निगरानी और वन संसाधनों के सतत उपयोग को सुदृढ़ बनाया गया।
- दावा प्रक्रियाओं में समावेशिता और समितियों में नेतृत्वकारी भूमिकाओं के माध्यम से आदिवासी महिलाओं का सशक्तिकरण हुआ।

युवा और महिला सशक्तिकरण

महिला सशक्तिकरण, मानव जीवन विकास समिति के कार्यक्रमों की आधारशिला है, जो ग्रामीण आजीविका और सामाजिक ढाँचे में बदलाव लाने में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका को बढ़ावा देता है। संस्था द्वारा महिलाओं के नेतृत्व, आर्थिक भागीदारी और सामाजिक समावेशिता को बढ़ाने के लिए विभिन्न पहलों को आसान बनाने का प्रयास किया जाता है।

स्व-सहायता समूह (एसएचजी)

एमजेवीएस ने महिलाओं के नेतृत्व वाले कई स्वयं सहायता समूहों का गठन और उन्हें सुदृढ़ किया है जो पारस्परिक सहयोग, बचत, ऋण पहुँच और उद्यमशीलता गतिविधियों के लिए मंच के रूप में कार्य करते हैं। ये समूह ग्रामीण महिलाओं में वित्तीय साक्षरता और सामूहिक निर्णय लेने की क्षमता को बढ़ावा देते हैं।

बाज़ार संपर्क और मूल्य संवर्धन

एमजेवीएस द्वारा महिला उत्पादकों को तकनीकी मार्गदर्शन, मूल्य संवर्धन प्रक्रियाओं और स्थानीय बाज़ारों, सहकारी समितियों और मेलों से जुड़ने में सहायता प्रदान की जाती है, जिससे उनकी आय और आर्थिक स्थिरता को बढ़ावा मिलता है।

सामाजिक समावेशिता और जागरूकता

संस्था के कुछ विशेष कार्यक्रम लैंगिक समानता, स्वास्थ्य, स्वच्छता, अधिकारों के प्रति जागरूकता और स्थानीय शासन (पंचायतों) में भागीदारी पर ज़ोर देते हैं। ताकि महिलाओं को ग्राम विकास समितियों और अन्य निर्णय लेने वाले मंचों में सक्रिय भूमिका निभाने के लिए प्रोत्साहित किया जा सके।

युवा विकास

मानव जीवन विकास समिति द्वारा ग्रामीण युवाओं को सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन के उत्प्रेरक के रूप में शामिल करने पर विशेष ज़ोर दिया जाता है। इसके विशेष कार्यक्रम मध्य प्रदेश और अन्य राज्यों के गाँवों में युवा सशक्तिकरण, नेतृत्व, व्यावसायिक कौशल विकास और रोज़गार सृजन को बढ़ावा देते हैं।

कौशल विकास और प्रशिक्षण

संस्था ग्रामीण युवाओं के लिए विशेष रूप से व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रदान करती है, जिसमें सिलाई, खाद्य प्रसंस्करण, मशरूम की खेती, साबुन और मोमबत्ती निर्माण और जैविक कृषि तकनीकें शामिल हैं। ये कौशल-निर्माण कार्यक्रम युवाओं विशेषकर महिलाओं, विकलांग व्यक्तियों और स्कूल छोड़ने वालों को स्वरोज़गार कार्य के माध्यम से स्थायी आजीविका प्राप्त करने में सक्षम बनाते हैं।

क्षमता निर्माण और अनुभव

युवाओं को नेतृत्व प्रशिक्षण और सफल परियोजनाओं के अनुभव दौरे प्राप्त होते हैं, जिससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था नियोजन, प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन और सामुदायिक शासन की समझ बढ़ती है। सरकारी विभागों और सहयोगी संगठनों के साथ सहयोगात्मक कार्यशालाएँ, युवाओं को ग्राम विकास समितियों और स्थानीय संस्थानों के लिए व्यावहारिक कौशल प्रदान करती हैं।

सामुदायिक भागीदारी और सामाजिक जुड़ाव

एमजेवीएस द्वारा ग्राम सभाओं, चुनाव जागरूकता, स्वास्थ्य एवं पोषण अभियानों और आपदा तैयारी में युवाओं की भागीदारी को प्रेरित किया जाता है। पारंपरिक खेल जैसे कबड्डी, खो-खो वगैरह और नागरिक सत्र जैसी मनोरंजक गतिविधियाँ लोकतंत्र, सेवा और आत्म-अनुशासन के मूल्यों को बढ़ावा देती हैं।

ग्राम सभा का सुदृढ़ीकरण एवं जन भागीदारी

सच्चा ग्रामीण विकास सहभागी शासन पर निर्भर करता है। एमजेवीएस ने ग्राम सभाओं को सुदृढ़ बनाने के लिए व्यवस्थित रूप से कार्य किया ताकि ग्रामीण विशेषकर महिलाएँ, युवा और वंचित जातियाँ स्थानीय संसाधनों और योजनाओं के बारे में उचित निर्णय ले सकें। इसके तहत निम्न गतिविधियाँ आयोजित जी जाती हैं-

01 ग्राम सभा-पूर्व जागरूकता बैठकें और दीवारों पर पोस्टर लगाकर तिथियों और कार्यसूची की घोषणा।

02 पंचायत प्रतिनिधियों और सामुदायिक स्वयंसेवकों को बजट और योजना बनाने का प्रशिक्षण।

03 कार्यों को प्राथमिकता देने के लिए सहभागी ग्रामीण मूल्यांकन (पीआरए) जैसे माध्यमों का उपयोग।

04 स्थानीय चुनावों से पहले मतदाता जागरूकता अभियान।

इस पहल ने स्थानीय लोकतंत्र को पुनर्जीवित किया है, जिससे ग्रामीण नागरिकों को निर्णय लेने का अधिकार प्राप्त हुआ है।

प्रभाव और परिणाम

- लगभग 258050 महिलाएँ म.प्र. के ग्रामीण जिलों में सशक्त हुईं।
- 5000 से भी ज़्यादा युवाओं को प्रशिक्षण मिला।
- शासन में युवाओं और महिलाओं भागीदारी बढ़ी।
- 1311 स्व-सहायता समूहों का गठन किया गया।
- महिलाओं के डिजिटल कौशल और उद्यमिता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई।
- युवा नेताओं की भागीदारी से किसान उत्पादक समूहों (एफपीओ) और ग्रामीण पर्यटन समितियों का गठन हुआ।
- प्राकृतिक और जैविक कृषि समूहों में युवाओं की भागीदारी में वृद्धि हुई।
- युवा नेतृत्व द्वारा सामुदायिक सहभागिता और लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं में सकारात्मक बदलाव हुए।
- महिलाओं की भागीदारी में 35-40% की वृद्धि हुई।
- बजट पारदर्शिता में वृद्धि और पंचायत योजनाओं में सामुदायिक प्राथमिकताओं का समावेश।

डिजिटल साक्षरता बड़े पैमाने पर (इंटरनेट साथी पहल)

आदिवासी और दूर-दराज़ के गाँवों में डिजिटल दूरी को कम करने के लिए, ग्रामीण महिलाओं और युवाओं के लिए एक बड़े पैमाने पर डिजिटल साक्षरता अभियान शुरू किया। यह अभियान एमजेवीएस का सबसे दूरगामी कार्यक्रम है। सन 2019 में सहयोगी संस्थाओं और राज्य के सहयोगियों के माध्यम से पहल शुरू हुई। तब से यह कार्यक्रम एमजेवीएस की सशक्तिकरण रणनीति का आधार बन गया है।

कार्यान्वयन और दृष्टिकोण

एमजेवीएस द्वारा प्रशिक्षित 330 "इंटरनेट साथियों" के एक समूह के माध्यम से, मंडला और डिंडोरी जिलों के 11 ब्लॉकों के 1,300 से अधिक गाँवों में डिजिटल शिक्षा प्रदान की गई। हर एक साथी ने घर-घर जाकर और समूह सत्रों का आयोजन किया:

स्मार्टफोन का बुनियादी उपयोग और इंटरनेट सुरक्षा।

सरकारी अधिकारों (पीडीएस, पेंशन, स्वास्थ्य बीमा) तक ऑनलाइन पहुँच।

आजीविका में सुधार और ई-लर्निंग के लिए व्हाट्सएप, यूट्यूब और गूगल सर्च का उपयोग

ऑनलाइन भुगतान, यूपीआई लेनदेन और ग्रामीण ई-कॉमर्स।

इस कार्यक्रम की वजह से डिजिटल पहुँच एक विशेषाधिकार न रहकर एक सामुदायिक संपत्ति में बदल गया, इससे उन महिलाओं की विशेष मदद हुई जो पहले औपचारिक रूक से शिक्षा प्राप्त नहीं कर सकीं।

छात्रवृत्ति सहायता

एमजेवीएस का मानना है कि अचानक आने वाले संकट, बीमारी, दुर्घटनाएँ या वित्तीय संकट किसी परिवार की प्रगति को पटरी से उतार सकते हैं। छात्रवृत्ति एवं जोखिम सहायता कार्यक्रम ऐसे संकटों को कम करने और बच्चों के शिक्षा एवं स्वास्थ्य के अधिकार की रक्षा के लिए शुरू किया गया था।

गतिविधियाँ

- माध्यमिक, उच्च और व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले हाशिए पर रहने वाले परिवारों के छात्रों के लिए शैक्षिक छात्रवृत्तियाँ।
- गंभीर बीमारी, प्रसव संबंधी जटिलताओं और दुर्घटनाओं के लिए आपातकालीन चिकित्सा सहायता।
- अत्यधिक कठिनाई वाले मामलों में विवाह या आजीविका बहाली अनुदान।

घरेलू स्तर पर जोखिम का समाधान करके, एमजेवीएस यह सुनिश्चित करता है कि एक आपातकालीन परेशानी पिछले कई वर्षों की सामाजिक प्रगति को बर्बाद न कर दे।

राहत कार्य

कोविड-19 राहत

कोविड-19 महामारी के दौरान, मानव जीवन विकास समिति ने प्रभावित गाँवों में भोजन, स्वच्छता किट और जागरूकता अभियान प्रदान करने के लिए संसाधन जुटाए। प्रतिबंधों के बीच स्वास्थ्य और पोषण सेवाओं की निरंतरता सुनिश्चित करने पर विशेष ध्यान दिया।

अन्य कल्याणकारी गतिविधियाँ

मानव जीवन विकास समिति अपने मुख्य कार्यक्रमों के साथ-साथ, ग्रामीण जीवन की समग्र गुणवत्ता और सामाजिक न्याय को बढ़ाने के उद्देश्य से और भी बहुत सारी कल्याणकारी गतिविधियाँ करती है।

शिक्षा सहायता

सरकारी स्कूलों को सुदृढ़ बनाना, शैक्षणिक सामग्री प्रदान करना तथा स्कूल में नामांकन और नियमित उपस्थिति को बढ़ावा देने के लिए जागरूकता अभियान चलाकर हाशिए पर पड़े बच्चों की शिक्षा का समर्थन करना जैसे कार्य भी संस्था के माध्यम से बी-ख़ूबी किये जाते हैं।

जल एवं स्वच्छता

घरेलू और सामुदायिक स्वच्छता सुविधाओं के निर्माण को बढ़ावा देना और ग्रामीण क्षेत्रों में बेहतर बेहतर स्वच्छता व्यवहार के लिए अभियान चलाने जैसी गतिविधियाँ भी आयोजित की जाती हैं।

मतदाता जागरूकता और कानूनी सहायता

संस्था द्वारा हाशिए पर पड़े समुदायों में चुनावी भागीदारी बढ़ाने के लिए मतदाता शिक्षा अभियान चलाया जता है। अधिकारों के प्रवर्तन, विवाद समाधान और शिकायत दर्ज करने के लिए कानूनी सहयोग भी दिया जाता है।

सामाजिक सुरक्षा और मानवाधिकार

मानव जीवन विकास समिति पेंशन, स्वास्थ्य बीमा और खाद्य सब्सिडी जैसी सामाजिक सुरक्षा योजनाओं तक पहुँच के लिए लोगों को प्रेरित भी करती है, साथ ही मानवाधिकारों और सरकारी अधिकारों के बारे में जागरूकता पैदा करने की पहल भी करती है।

नेत्र-देखभाल एवं स्वास्थ्य आउटरीच

अपने अन्य विकास कार्यक्रमों के साथ-साथ मानव जीवन विकास समिति द्वारा ग्रामीण स्वाथ्य सेवा की पहुँच में सुधार के लिए, समय-समय पर चिकित्सा सम्बन्धी कार्यक्रमों का का आयोजन भी किया जाता है।

प्रमुख हस्तक्षेप

01 जबलपुर के नेत्र रोग विशेषज्ञों के सहयोग से नेत्र-देखभाल शिविर जाँच, उपचार और निःशुल्क मोतियाबिंद सर्जरी।

02 मातृ देखभाल, पोषण और मासिक धर्म स्वच्छता पर स्वास्थ्य जागरूकता सत्र।

03 स्थानीय रूप से उगाए गए पौधों का उपयोग करके आयुष हर्बल औषधि का प्रदर्शन।

प्रभाव और परिणाम

- 75 स्कूलों का उन्नयन संभव हो सका जिसमें 750 बच्चों का दाख़िला कराया गया।
- 500 से अधिक स्वास्थ्य शिविर आयोजित किए गए, जिनसे 30,000 से भी अधिक लोगों को लाभ मिला।
- 200 से अधिक मोतियाबिंद सर्जरी की गयीं।
- स्वच्छता और निवारक देखभाल जागरूकता के माध्यम से रोकथाम योग्य रोगों में कमी।

गो-रूर्बन युवा शिविर

गांधीवादी मूल्यों को आगे बढ़ाते हुए, एमजेवीएस द्वारा गो-रूर्बन शिविरों का आयोजन किया जाता है। यह कार्यक्रम, चार-पाँच दिवसीय आवासीय कार्यक्रम है जो ग्रामीण और शहरी युवाओं को साझा शिक्षा और सामुदायिक सेवा के लिए एकजुट करता है।

गतिविधियाँ

- अहिंसा, समानता और सतत जीवन पर चर्चाएँ।
- श्रमदान गतिविधियाँ जैसे स्वच्छता अभियान और वृक्षारोपण।
- किसानों, कारीगरों और स्थानीय नेताओं के साथ संवादात्मक सत्र।
- सहानुभूति और समझ को बढ़ावा देने वाली संयुक्त सांस्कृतिक संध्याएँ।

प्रभाव और परिणाम

- 600 से अधिक युवा प्रतिभागियों के साथ 18+ शिविर आयोजित किए गए हैं।
- अंतर-क्षेत्रीय एकजुटता और सेवा अभिविन्यास को मज़बूत किया गया है।
- पूर्व छात्रों ने स्वास्थ्य, पर्यावरण और शिक्षा के क्षेत्र में अपनी सामुदायिक परियोजनाएँ शुरू की हैं।

ये शिविर नैतिक और सामाजिक ताने-बाने को बनाए रखते हैं जो सभी एमजेवीएस कार्यक्रमों का आधार हैं।

> विश्वास वह पंछी है जो अँधेरा रहते भी उजाले को महसूस कर लेता है।
>
> - रवींद्रनाथ टैगोर

05 पच्चीस सालों में हुए कार्यों के परिणाम एवं प्रभाव

मध्य प्रदेश, राजस्थान, केरल और अन्य राज्यों के 14 ज़िलों और 1,621 से भी अधिक गाँवों में हाशिए पर पड़े ग्रामीण समुदायों, विशेषकर छोटे किसानों, आदिवासियों और दलितों को सशक्त बनाने में मानव जीवन विकास समिति ने उल्लेखनीय काम किया है। संस्था के बहुआयामी कार्यक्रम, स्थायी आजीविका, प्राकृतिक संसाधन संरक्षण, सामाजिक न्याय, स्वास्थ्य, शिक्षा, ग्रामीण पर्यटन और सामुदायिक क्षमता निर्माण पर केन्द्रित हैं।

प्रमुख प्रभाव कुछ इस प्रकार हैं

भूमि अधिकार की सुरक्षा

एमजेवीएस द्वारा वन अधिकार अधिनियम 2006 के तहत भूमि स्वामित्व को आसान बनाया गया, फलस्वरूप वन अधिकार अधिनियम के तहत 2310 किसानों को 5250 एकड़ ज़मीन का अधिकार प्राप्त हुआ। साथ ही सामुदायिक अधिकार के अंतर्गत 98 गाँवों में 4549 एकड़ ज़मीन का भी अधिकार मिला। एमजेवीएस की इस पहल से 2,000 से भी ज़्यादा परिवारों को दावा दायर करने और पारम्परिक रूप से उनके कब्ज़े वाली वनभूमि पर कानूनी अधिकार यानी पट्टे हासिल करने में मदद मिली है। इससे स्थायी खेती सम्भव हो सकी।

कृषि आजीविका में वृद्धि

संस्था द्वारा सामुदायिक श्रम भागीदारी के साथ 250 खेत-तालाब, 210 चेकडैम, 710 सामुदायिक तालाब और 308 कुओं के निर्माण एवं नवीनीकरण में सहयोग दिया गया। इन प्रयासों से सिंचाई और मृदा उर्वरता में सुधार हुआ, जो फ़सल उत्पादकता के लिए महत्वपूर्ण है।

जल एवं मृदा संरक्षण

जैविक खेती, धान के गहनीकरण प्रणाली (एसआरआई) और प्राकृतिक कीट प्रबंधन को हज़ारों किसानों ने व्यापक रूप से अपनाया है, जिससे कृषि आय में 25-30% की वृद्धि हुई है। 21700 किसानों को जैविक कृषि का प्रशिक्षण मिला, जिससे कृषि लागत में 30-35 % की कमी आई है और उपज में 15-20% की वृद्धि हुई।

डिजिटल साक्षरता

कार्यक्रमों के द्वारा प्रशिक्षित 330 "इंटरनेट साथियों" के एक समूह के माध्यम से, मंडला और डिंडोरी जिलों के 11 ब्लॉकों के 1,300 से अधिक गाँवों में डिजिटल शिक्षा प्रदान की गई। बहुत बड़े पैमाने पर 2,31,000 से भी ज़्यादा ग्रामीण महिलाओं को स्मार्टफोन का उपयोग करने का प्रशिक्षण दिया गया, जिससे शिक्षा, स्वास्थ्य जागरूकता और उद्यमशीलता के अवसरों में वृद्धि हुई। स्व-सहायता समूह और जैविक सामग्रियों के लिए उद्भवन केंद्र महिलाओं को ग्रामीण अर्थव्यवस्था के प्रमुख संचालक के रूप में सशक्त बनाते हैं।

ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा

गाँव की सांस्कृतिक विरासत को बचाए रखने तथा गाँव को और बेहतर बनाने के लिए सामुदायिक ग्रामीण पर्यटन के ज़रिए गाँव के लोग, अन्तरराष्ट्रीय पर्यटकों की मेज़बानी करके सीधी आय प्राप्त करने में सक्षम हुए हैं। यह अभिनव पहल गैर-कृषि आजीविका और अन्तरराष्ट्रीय सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा देती है। 5 जिले के 11 गाँवों में 110 होमस्टे डेवलप कर ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा दिया जा रहा है। परिणामस्वरूप, ग्रामीण पर्यटन गतिविधियों में भाग लेने वाले परिवारों की औसत आय में 30-40% तक की वृद्धि देखी गयी।

सामाजिक जागरूकता

मतदाता जागरूकता अभियानों और ग्राम सभाओं की सक्रियता के कारण हाशिए पर पड़े समुदायों में नागरिक भागीदारी बढ़ी और सरकारी कल्याणकारी योजनाओं तक उनकी पहुँच बेहतर हुई। पंचायत प्रतिनिधियों के प्रशिक्षण से विकेंद्रीकृत शासन व्यवस्था को बल भी मिला।

पर्यावरणीय स्थिरता

गैर-कीटनाशक प्रबंधन, वर्मीकंपोस्टिंग, जैविक खाद उत्पादन और बड़े पैमाने पर वृक्षारोपण को बढ़ावा देने से रासायनिक उर्वरक पर निर्भरता कम करते हुए मृदा स्वास्थ्य और जैव विविधता को सुधारने में मदद मिली है। इन पच्चीस सालों में 8000 परिवारों में कुल 197676 पौधे लगाए गए।

क्षमता निर्माण का प्रभाव

संस्था द्वारा हज़ारों किसानों के लिए क्षमता-निर्माण के कार्यक्रम किये गए, जिसके चलते 5413 परिवारों को आजीविका के नए साधन मिले। सैकड़ों जल संरक्षण संरचनाओं का निर्माण भी हुआ। युवाओं को संगठित कर उन्हें प्रशिक्षित किया गया और सामुदायिक नेतृत्व तैयार किये गए।

संस्था का दृष्टिकोण पारिस्थितिक स्थिरता, सामाजिक समता और आर्थिक लचीलेपन को एक साथ लेकर चलने का है जो ज़मीनी स्तर के के नेतृत्व और रणनीतिक साझेदारियों पर आधारित है। इस तरीक़े से होने वाले कार्यों के संचयी प्रभाव भारत के कुछ सबसे कमज़ोर ग्रामीण क्षेत्रों में खाद्य सुरक्षा, स्वास्थ्य और आजीविका में वृद्धि के रूप में देखे जा सकते हैं।

“
भविष्य उसी का होता है जो वर्तमान में उसकी तैयारी करता है।

– जवाहरलाल नेहरू

06 बदलाव की ओर

मानव जीवन विकास समिति से जुड़े समुदायों की बदलाव की यात्रा सशक्तिकरण और सतत विकास की प्रेरक कहानियों से भरी हुई हैं।

सामुदायिक परिवर्तन

एक समय में जो गाँव ग़रीबी, भूमिहीनता और संसाधनों की कमी से जूझ रहे थे, उनमें आत्मनिर्भरता की दिशा में महत्वपूर्ण बदलाव सामने आए हैं। जैविक खेती और प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन को अपनाने से कृषि उत्पादकता, पोषण और घरेलू आय में नई ऊर्जा आई है। पारंपरिक रूप से शोषणकारी प्रणालियों पर निर्भर रहने वाले परिवार, अब एमजेवीएस की सहायता से भूमि अधिकार प्राप्त कर रहे हैं और सरकारी अधिकारों का लाभ भी भरपूर उठा रहे हैं।

व्यक्तिगत सफलताएँ

पंचायतों और ग्राम समितियों में नेतृत्व की भूमिका में सामने वाली महिलाओं और युवाओं की कहानियाँ, सामाजिक सशक्तिकरण की सफलताओं का उदाहरण हैं। व्यावसायिक कौशल में प्रशिक्षित कई युवाओं ने सफलतापूर्वक सूक्ष्म-उद्यम शुरू किए हैं और ग्रामीण अर्थव्यवस्था में योगदान दिया है। महिलाओं में डिजिटल साक्षरता ने सूचना और आर्थिक अवसरों तक अभूतपूर्व पहुँच प्रदान की है।

सांस्कृतिक पुनरुत्थान

स्थानीय, स्वदेशी कलाओं, आदिवासी रीति-रिवाज़ों और पारंपरिक ज्ञान की सराहना और संरक्षण सामुदायिक पहचान और गौरव को मज़बूत करता है, जिससे निरंतर विकास के लिए आवश्यक सामाजिक ताना-बाना बुनने में मदद मिलती है।

केस स्टडी और प्रशंसापत्र

लाभार्थी बताते हैं कि कैसे वन अधिकार अधिनियम के तहत दिए गए वन भूमि अधिकारों ने उनकी आर्थिक संभावनाओं को बदल दिया और संकटग्रस्त प्रवास को कम किया। किसान बताते हैं कि- कैसे श्री तकनीकों ने फ़सल उपज में उल्लेखनीय वृद्धि की। महिलाएँ, स्व-सहायता समूहों और डिजिटल कौशल के माध्यम से अपने सशक्तिकरण के बारे में बताती हैं, जिसकी वजह से घरों और समाज में उनकी भूमिकाओं में बदलाव आया।

तकनीकी प्रशिक्षण, अधिकारों की वकालत, सामाजिक समावेशन और सांस्कृतिक संरक्षण के संयोजन वाले एमजेवीएस के एकीकृत दृष्टिकोण ने परिवर्तन की इन कहानियों को उत्प्रेरित किया है और ग्रामीण परिदृश्य में निरंतर प्रगति को बढ़ावा दिया है।

“
हम सभी महान काम नहीं कर सकते, लेकिन छोटे काम प्रेम से कर सकते हैं।
- मदर टेरेसा

07 सफलता की कहानियाँ

श्रमदान आधारित तालाबों, कुओं के बनाने से बढ़ा फ़सल का उत्पादन

जिला दमोह मध्य प्रदेश की जनपद पंचायत तेदूखेड़ा की ग्राम पंचायत बिशनाखेड़ी का वनांचल आदिवासी ग्राम ससनाखुर्द के 86 परिवारों के सदस्यों ने रचा इतिहास श्रमदान आधारित तालाब व कुओं का किया निर्माण।

ससनाखुर्द एक वनांचल गाँव है इस गाँव में 48 कुँए हैं जिसमें 6 से 9 माह तक पानी रहता था जिससे किसान अपनी खेती कि सिचाई नहीं कर पाते थे रवि फ़सल में एक या दो पानी ही लोग फ़सल में दे पाते थे जिसके पास जो साधन थे इस गाँव की खेती बारिस पर निर्भर थी बारिस में मुख्य फसल धान,मक्का, तिली, उड़द, तुअर, रवि फ़सल में गेहूँ चना सरसों बटरा अलसी की खेती किसान करते हैं तथा गर्मियों में तेदूंपत्ता महुआ बन उपज संकलन कर अपनी आजीविका चलाते हैं मानव जीवन विकास समिति कटनी के आने से पूर्व गाँव से लोग पलायन करते थे 6 माह 10 माह तक जून का महिना नजदीक आते ही लोग घर वापसी करते थे गाँव में बच्चे शिक्षा से वंचित रहते थे मानव जीवन विकास समिति संगठन की पकड ससनाखुर्द में 2006 से है मानव जीवन विकास समिति द्वारा गाँव में ग्राम विकास इकाई बनाई गई है। ग्राम विकास समिति की मीटिंग माह में एक बार व आवश्यकता के अनुसार होती है मीटिंग में मुद्दा आधारित चर्चा और निर्णय समिति के लोग करते हैं मानव जीवन विकास समिति बिजौरी कटनी के सहयोग से ससनाखुर्द में 46 आदिवासी परिवारों के लिए वन भूमि पर संयुक्त हक प्रमाण पत्र प्राप्त हुये हैं अनुसूचित जनजाति ओर अन्य परम्परागत बन अधिकारों की मान्यता अधिनियम 2006 के संघर्षों में महिलाओं, पुरूषों की भागीदारी को मज़बूत करने के लिए मानव जीवन विकास समिति द्वारा कानून की जानकारी जन जागरूकता प्रचार प्रसार विशेष रूप से उल्लेखनीय रहा है।

मानव जीवन विकास समिति लघु सीमांत किसानों के साथ मिलकर काम करती है ताकि लोगों की आजीविका ख़डी हो गाँव में लोगों की साथ ग्रामीण और वंचित समुदायों की महिलाओं को संगठित कर उनके नेतृत्व को सशक्त बनाने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया है।

संगठन महिला समूहों का गठन और सशक्तिकरण व आत्मनिर्भर बनाना, उनके अधिकारों की रक्षा करना और स्थानीय समस्याओं को हल करने में उनकी भागीदारी सुनिश्चित करना रहा है।

महिलाओं की भूमि पर स्वामित्व बढ़ाने और जल संसाधनों के संरक्षण के लिए मानव जीवन विकास समिति ने मैदानी स्तर पर नेतृत्व प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए। इनमें महिला पुरूष संगठित होकर आवाज़ उठा सकें।

मानव जीवन विकास समिति ने महिला पुरूषों को ग्राम सभाओं में सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित किया, जिससे वे न केवल स्थानीय प्रशासन में अपनी आवाज़ उठा सकें बल्कि पंचायत स्तर पर नेतृत्व की भूमिका भी निभा सकें। मानव जीवन विकास समिति ने महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण किया, जिससे विभिन्न स्वरोजगार खेती, कुटीर उद्योग और अन्य आजीविका के साधनों में आत्मनिर्भर बन सकें। वनांचल गाँव ससनाखुर्द में महिला पुरूषों के साथ मानव जीवन विकास समिति के कार्यकर्ताओं ने लोगों के साथ मीटिंग की और बैठक में उपस्थित महिला पुरूषों ने चर्चाओं में भाग लिया कि गाँव में चार पाँच माह पानी की बहुत समस्या होती है उस समस्या से निपटने के लिए अगर कहीं से आर्थिक मदद हो जाये तो हम समस्त लोग श्रमदान आधारित कुआँ तालाब बनाने के लिए तैयार हैं ब्लॉक सम्नव्यक घनश्याम प्रसाद रायकवार ने उपस्थित लोगों से कहाँ कि पहले गाँव के किसानों का सर्वे किया जाये जिससे एक मोटा डेटा संगठन संस्था के पास होना चाहिए। किसानों का सर्वे किया गया जिसमें पानी के स्त्रोत 48 कुआँ 04 बोर बेल 78 किसान भूमि रकवा 305 के लगभग जिसका उत्पादन 758 क्विंटल खरीफ़ फ़सल तथा रवि फ़सल 453 क्विंटल अनाज का उत्पादन होता था। उक्त मीटिंग की कार्यवाही की जानकारी मानव जीवन विकास समिति सचिव श्री निर्भय सिंह जी के पास भेजी गई और श्रमदान आधारित तालाब बनाने का निर्णय स्वीकार किया गया तथा कुआँ तालाबों का श्रमदान आधारित निर्माण किया गया।

मानव जीवन विकास समिति 03 तालाब 08 कुओं का श्रमदान आधारित निर्माण कराया गया किसानों के लिए नवाचार के माध्यम से श्री विविध से खेती करने के गुण सिखाये गये खरीफ़ फ़सल का उत्पादन 1978 क्विंटल हुआ तथा रवि फ़सल का उत्पादन 1619 क्विंटल बढ़ा किचिन गार्डन के माध्यम से सब्जी उत्पादन के बीज दिए गए किसानों के लिए मुर्गी पालन मछली पालन करवाया गया पशुपालन आधारित खेती करने के प्रशिक्षण दिये गये हरी खाद बनाने के लिए बेंच, भूनाडेप, बर्मीबैड , इत्यादि संसाधन संस्था संगठन द्वारा उपलब्ध कराये गये तथा गाँव में तीन तालाब निर्माण किये गए। तालाबों के बनने से कुओं में बारह माह जल उपलब्ध होने लगा। बन भूमि हक प्रमाण पत्र प्राप्त होने से गाँव के लोगों का पलायन रुका तथा लोगों की आर्थिक स्थिति मज़बूत हुई रवि फ़सल का सिचाई रकबा बढ़ा जो भूमि ख़ाली पडी रहती थी वह सिंचित हो गई तथा किसान ख़रीफ़ ओर रवि दोनों फ़सलों का उत्पादन करने लगे किसानों के लिए मानव जीवन विकास समिति द्वारा जैविक खेती करने के लिए प्रेरित किया जा रहा है और जैविक दवाईयाँ एवं जैविक खाद बनवाया जा रहा है किसान स्वयं दवाईयां व खाद बनाते हैं तथा उपयोग कर रहे हैं।

जहाँ एकता वहाँ सफलता, हर्रई के लोगों की मेहनत और संगठन की मिसाल

दमोह जिले की चंदना के पंचायत अंतर्गत बसे छोटे से गाँव हर्रई में पानी की एक पुरानी लेकिन बुनियादी समस्या ने वर्षों से आदिवासी और पिछड़े वर्ग के परिवारों को परेशान कर रखा था। 45 किलोमीटर दूर तहसील मुख्यालय और 85 किलोमीटर जिला मुख्यालय से दूरी पर बसे इस गाँव का निकटतम बाज़ार तारा देही 8 किलोमीटर दूर है। गाँव में कुल 78 परिवार हैं, जिनमें 48 आदिवासी परिवार शामिल हैं, जिन्हें वर्ष 2012 में वन अधिकार कानून के तहत कृषि भूमि के पट्टे प्राप्त हुए।

समस्या की जड़

भले ही इन परिवारों को ज़मीन का कानूनी अधिकार मिल गया हो, पर सिंचाई का कोई साधन न होने से खेती संभव नहीं हो पा रही थी। इन लोगों को नज़दीकी किसानों से महंगे दामों पर पानी ख़रीदना पड़ता था सिंचाई के लिए और फिर भी समय पर पानी न मिलने से फ़सलें ख़राब हो जाती थीं। मुख्यतः यह समुदाय केवल बरसात के मौसम की फ़सल पर ही निर्भर था।

एक बार इन किसानों ने एक कुआँ खोदने की कोशिश की, लेकिन 9 फीट खुदाई के बाद ही कठोर चट्टानों के कारण काम रुक गया। प्रशासन और जनप्रतिनिधियों को कई बार आवेदन दिए गए – कपिलधारा योजना और खेत तालाब योजना के तहत –परन्तु कोई हल नहीं निकला।

संघर्ष से समाधान की ओर – एक नई शुरुआत

इस पीड़ा की जानकारी जब मानव जीवन विकास समिति सचिव श्री निर्भय सिंह जी के पास पहुँची कार्यकर्ताओं के माध्यम से , तो समिति सचिव ने समिति ब्लॉक समन्वयक के माध्यम से गाँव के मुखियाओं व ग्राम विकास समिति की गाँव में एक सामूहिक बैठक का आयोजन हुआ, जिसमें सभी ग्रामीणों ने एक स्वर में निर्णय लिया – अगर संस्था आर्थिक सहयोग करे, तो वे श्रमदान से तालाब निर्माण करने के लिए तैयार है ग्राम पंचायत से लेकर बीड गार्ड रेंज एवं वन मंडल अधिकारी जिला दमोह मध्य प्रदेश तक आवेदन दिये NOC के लिए लेकिन असफलता हाथ लगी लेकिन मानव जीवन विकास समिति बिजौरी जिला कटनी के श्रमदान आधारित जागरूकता के माध्यम से ग्राम विकास समिति के निर्णय ओर मेहनत कश किसानों के लिए कहाँ आराम किसानों ने कुएँ का निर्माण करने का निर्णय लिया ओर 06 कुओशं का निर्माण किया गया।

दिनांक – जून 2025 को गाँव का भ्रमण करने पहुँचे

प्रसिद्ध समाजसेवी श्री यतीश भाई मुंबई से आए और पानी, खेती और ग्राम स्वराज के कार्यों का अवलोकन किया और ग्रामीणों की समस्या को समझा। ग्रामवासियों की एक समिति बनाई गई समिति से सहमति प्राप्त कर संस्था द्वारा कुएँ के निर्माण में सहयोग शुरू हुआ।

निर्माण यात्रा – चट्टानों से जीत की कहानी

गाँव के युवाओं, मजदूरों और कारीगरों ने मिलकर लगातार एक महीने तक कठिन परिश्रम किया। कठोर चट्टानों को हथौड़ों और छैनी से तोड़ते हुए उन्होंने अंततः 38 फीट गहरा और 40 फीट चौड़ा कुआँ तैयार कर दिया।

परिणाम – एक बदलाव की लहर

42 एकड़ भूमि अब सिंचित हो चुकी है। खेतों में साल भर नमी बनी रहती है, जिससे सभी मौसमों में खेती संभव हो गई है। जानवरों और राहगीरों को भी पीने का पानी उपलब्ध हुआ है। अतिरिक्त पानी को बेचकर आय का स्रोत भी बनने लगा है। पलायन (विशेषतः गुजरात, अहमदाबाद की ओर) रुक गया है। गाँव के युवा अब स्थानीय मज़दूरी और खेती से ही आजीविका चला पा रहे हैं। सब्जी, अनाज की उत्पादन क्षमता बढ़ी है जिससे आर्थिक आत्मनिर्भरता का मार्ग खुला है।

हर्रई गाँव का यह प्रयास यह बताता है कि जब संगठन, संकल्प और सहयोग मिलते हैं, तो कठिन से कठिन चट्टानें भी रास्ता देती हैं। यह केवल एक कुओं की कहानी नहीं, बल्कि ग्राम स्वराज, जल स्वावलंबन और आत्मनिर्भरता की एक प्रेरणादायक मिसाल है।

रासायनिक खेती से बदलाव की ओर संघर्ष

मैं रुक्मणी गौंड ग्राम भिनेनी ब्लॉक जबेरा जिला दमोह (म. प्र.) की निवासी हूं मेरे परिवार में मेरे पति के नाम पर सिर्फ़ एक एकड़ ज़मीन है और मेरे परिवार में तीन बच्चियों सहित पांच सदस्य हैं जिससे कि इतनी कम जमीन होने से मेरे परिवार का भरण पोषण पर्याप्त नहीं हो पता था मुझे घर के अन्य ख़र्चों के लिए बाहर मज़दूरी करने जाना पड़ता था साथ ही बीड़ी के रोज़गार से जुड़ी हुई थी घर के कामकाज करके समय मिलता तो बीड़ी बनाकर घरेलू ख़र्च को चलाती थी और पति बाहर मज़दूरी करके घर का भरण पोषण करत थे ।

चुनौती

खेती करने के लिए कोई घर का साधन नहीं है और ना ही पानी का कोई साधन है जिससे कि टाइम टेबल पर सिंचाई कर सकें साथ ही फ़सलों के बोने के सीजन पर लागत की ज़रूरत पड़ती थी जिसके लिए हमें मज़दूरी करके लागत की पूर्ति करनी पड़ती थी या सेठ साहूकारों से उधार लेकर लागत लगाया करते थे बीज से लेकर खाद-दवाई इत्यादि मज़दूरी करके या सेठ साहूकारों से उधार लाया करते थे इसके साथ तीन बच्चियाँ है जो अभी बहुत छोटी हैं उनका घर के कामों के साथ-साथ उनको संभालना और उनका भरण-पोषण करना उनकी ज़रूरतों को पूरा करना बहुत ही कठिन था। एकड़ में जो हमारी फ़सल का उत्पादन होता था तो उसका कुछ भाग लागत में कट जाता था जैसे कि जो हमने लागत मज़दूरी करके लगाई या जो सेठ साहूकारों से जो उधार लिए तो उत्पादन का कुछ भाग उनका चला जाता था उसके बाद जो बचता था तो कुछ घर के खर्चों के लिए और एक या डेढ़ कुंटल की लगभग खाने के लिए बचता था।

नवीन दिशा की ओर

सन 2022 को मेरे इसी हालातो के बीच हमारे गाँव में मानव जीवन विकास समिति संस्था का आगमन हुआ जिसके प्रमुख सचिव श्री निर्भय सिंह जी के मार्गदर्शन में कार्यकर्त्ता श्रीमति हरीबाई गौंड आयी जिसने संस्था के कार्यों जैसे जल जंगल ज़मीन के कार्यों के साथ-साथ ग़रीब परिवारों की आर्थिक स्थिति को बढ़ावा देना साथ ही पशुपालन बकरी पालन मुर्गी पालन और जैविक खेती को बढ़ावा देना इत्यादि के बारे में विस्तार पूर्वक जानकारी दी और समझायी। साथ ही सरकारी योजनाओं से जोड़ने या लिंकेज करने के बारे में बताए।

सरकारी योजनाएँ

पहले हम कृषि कार्य के लिए सेठ- साहूकारों से बीज के लिए निर्भर रहते थे या ख़रीद कर लाते थे लेकिन जब से मानव जीवन विकास समिति के कार्यकर्ता हरीबाई गौंड ने हमारे यहाँ हमारे गाँव में कार्य करना प्रारंभ किया तब से हमें कृषि विभाग से बीज उपलब्ध हो जाता है कुछ बीज फ्री प्राप्त हो जाते थे जैसे मसूर, उड़द इत्यादि के बीज और गेहूँ चना का बीज सब्सिडी के रूप में बीज प्राप्त हो जाता था इसके साथ-साथ हमने श्रीमती हरीबाई गौंड के सहयोग से स्वयं सहायता समूह का निर्माण जिसमें 10 महिलाओं का संगठन बनाया और उसमें हम साप्ताहिक बचत साप्ताहिक बैठक और इसके साथ-साथ ही खेती को लेकर जैसी जैविक खेती में प्रयुक्त जैव कीटनाशक बनाना जैविक खाद्य इत्यादि गतिविधि को करने लगे।

जैविक खेती

मानव जीवन विकास समिति के कार्यकर्त्ता श्रीमती हरीबाई गौंड ने हमें जैविक खेती और प्राकृतिक खेती के बारे में विस्तार पूर्वक समझाया, जैसे कि यह शून्य बजट की खेती है, इसमें लागत 0% होती है। इसके अलावा पशुपालन से संबंधित गोपालन की विशेष महत्वता है इसके बारे में विस्तार पूर्वक समझाया, जैसे कि जैविक खेती के लिए खाद दवाई इत्यादि हमारे पशुपालन पर निर्भर करता है। इनके कहने से हमने हमारे घर में एक वर्मीबेड लगाया जिसमें गोबरखाद में केंचुआ डाला जो कि 3 महीने बाद केंचुआ खाद बन कर तैयार हो गई। इसके साथ-साथ हमने भुनाडेप बनाए जो कि दो से तीन महीने में भुनाडेप खाद तैयार हो गया। इसके साथ-साथ ही हम घर में कार्यकर्त्ता हरीबाई के सहयोग से जैव कीटनाशक तैयार करने लगे और फ़सलों में प्रयोग करने लगी जिससे कि हमारी खेती की लागत कम होने लगी। सन 2023 में हमने रवि सीजन के समय चना की खेती की थी। एक एकड़ में जिसमें हमने जैविक खाद और जैव-कीटनाशक का प्रयोग किया था जिससे हमें इसके उत्पादन से लगभग 7 से 8 कुंटल चना प्राप्त हुआ था 30kg चने के बीज से साथ ही जैविक खेती करने से हमारे खेत की मिट्टी में सुधार आया और स्वास्थ्य अनाज की प्राप्त होने से हमारे स्वस्थ के लिए स्वास्थ्य अनाज की प्राप्ति हुई और अब हम लगातार दो-तीन बरसों से जैविक खेती करते आ रहे हैं साथ ही हमारे आसपास के किसानों को भी जैविक खेती के संबंध में बताते हैं। इसी बीच सन 2023 में रवि सीजन के समय चने की फ़सल के उत्पादन में कृषि विभाग के माध्यम से उच्चतम पुरस्कार हेतु हमारे पति श्री कल्याण सिंह को सा-सम्मान 10000 रुपये कि राशि और जैविक खेती का प्रमाण पत्र प्राप्त हुआ।

मैंने मानव जीवन विकास समिति की कार्यकर्त्ता हरीबाई गौंड MJVS के सहयोग से जैविक खेती के बारे में लगातार समूह के साथ बैठक करके जैविक कीटनाशक बनाकर जैविक खाद बनाना सीखा और लोगों को किस प्रकार मोटिवेशन करना है घर में महिलाओं की खेती बाड़ी में महिलाओं की किस प्रकार से भागीदारी होती है यह सब विस्तार पूर्वक समझा मैं भी पुरानी रीति रिवाज़ और अंधविश्वासों से बंधी हुई थी परिवार के बीच में जैसे कि घूँघट में रहना और पुरुषों के सामने अपनी बात ना रखना और अपने सपनों को दबाकर रखना लेकिन जब से हरीबाई गौंड का सहयोग मिला तब से मैं अपने घर परिवार और समूहों के बीच बैठकर अपनी बातों को सबके समक्ष रखने लगी जिससे कि मेरे मन में भी कुछ करने के लिए विचार आए और इसी बीच सरकारी योजना जैसे राष्ट्रीय प्राकृतिक खेती मिशन योजना के अंतर्गत प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए योजना लागू हुई। इस योजना के अंतर्गत मुझे कृषि सखी के रूप में चयनित किया गया जो कि मैं वर्तमान में अपने ग्राम भिनेनी में कृषि सखी कार्य कर रही हूँ।

मैं श्रीमती रुक्मणी गौंड हृदय से आत्मविश्वास के साथ कह सकती हूँ कि मानव जीवन विकास समिति के प्रमुख सचिव श्री निर्भय सिंह जी और कार्यकर्त्ता श्रीमती हरीबाई गौंड के मार्गदर्शन से मेरे जीवन और खेती में लगातार संघर्ष करने से जो बदलाव आए हुए हैं मैं उसके लिए सदैव आभारी रहूँगी साथ ही मुझे आत्मनिर्भर बनाने और आत्मनिर्भर रहने के लिए प्रेरित किया उसके लिए धन्यवाद।

रासायनिक खेती से छुटकारा जैविक खेती से सफलता की ओर

किसान श्री जौहर कुशवाहा, कटनी जिले के एक परिश्रमी किसान हैं, जिनके पास 2.5 एकड़ खेती योग्य भूमि है। 52 वर्ष की आयु में, वह और उनकी पत्नी अपने परिवार के पालन-पोषण के लिए खेती और मज़दूरी पर निर्भर थे, जबकि उनके दो शादीशुदा बेटे अलग रहते हैं।

परिवर्तन से पहले

रासायनिक खेती की चुनौती पहले, जौहर जी रासायनिक खेती करते थे। बाज़ार से महँगी केमिकल दवाइयाँ ख़रीदकर फ़सल में डालते थे, जिससे खेती की लागत बहुत अधिक हो गई थी और उन्हें आर्थिक संघर्ष का सामना करना पड़ रहा था।

एक नई राह की शुरुआत

एक दिन, जौहर जी की मुलाक़ात मानव जीवन विकास समिति संस्था के कार्यकर्त्ता श्री ओम प्रकाश यादव जी से हुई। ओम प्रकाश जी ने उन्हें जैविक खेती के फ़ायदों के बारे में बताया। संस्था के सचिव श्री निर्भय सिंह सर के मार्गदर्शन में, गाँव में एक बैठक का आयोजन किया गया, जिसने जौहर जी के जीवन की दिशा बदल दी। उन्होंने खेती मे रवि सीजन मे सब्जी लगाई 0.5 डिसमिल मे और उसमे गोबर खाद और जैविक दवाई का उपयोग किया और लगभग 45000 हजार की सब्जियाँ बेचीं और इसके बाद SRI विधि से धान का रोपण किया जिसमे उन्हें बीज की मात्र एक एकड़ मे 4 kg धान का बीज रोपण किया जिसका उत्पादन 15 कुंटल धान निकला जो वे कभी नहीं निकाल पाए। मानव जीवन विकास समिति खेती मे नई तकनीक और नई राह दिखा कर मुझे जीवन की सफलता के ओर लेकर आई और मुझे समय समय पर प्रशिक्षण दिया।

जैविक खेती की ओर क़दम

बैठक में, ओम प्रकाश यादव जी ने समझाया कि जैविक खेती कैसे करनी है और इसके क्या लाभ हैं। उन्होंने बताया कि गोबर की खाद का उपयोग करने से ज़मीन के बैक्टीरिया और जीवाश्म तेजी से वापस आ जाते हैं।

किसान अपने आस-पास की वनस्पति और गौ मूत्र का उपयोग करके घर पर ही जैविक दवाइयाँ बना सकते हैं, जिससे लागत शून्य हो जाती है।

खाद बनाने के तरीके

केंचुआ खाद (वर्मी कम्पोस्ट): एक वर्मी बेड में गोबर और कचरा डालकर 3 माह में बेहतरीन खाद तैयार हो जाती है।

भू-नाडेपः यह बिना किसी लागत के, सिर्फ गोबर, कचरा और मिट्टी से 3 माह में खाद तैयार करने की एक सरल विधि है।

सफलता – 3 साल का संकल्प

जौहर जी ने इस नए रास्ते को अपनाया और तीन साल के लिए जैविक खेती करने का संकल्प लिया। संस्था के मार्गदर्शन से उन्होंने रासायनिक खाद और दवाइयों को पूरी तरह छोड़ दिया। जैविक तरीक़ों से लगातार खेती करने का परिणाम यह हुआ कि लागत में भारी कमी आई, क्योंकि खाद और दवाई घर पर ही तैयार होने लगीं। उनके खेत की मिट्टी की उर्वरक शक्ति कई गुना बढ़ गई। फ़सल का उत्पादन अच्छा होने लगा और उन्हें बेहतर मुनाफ़ा मिलने लगा। अब जौहर कुशवाहा जी न केवल आर्थिक रूप से मज़बूत हैं, बल्कि स्वास्थ्य वर्धक फ़सलें उगाकर समाज को भी लाभ पहुँचा रहे हैं। श्री जौहर कुशवाहा की यह यात्रा दर्शाती है कि दृढ़ संकल्प और सही मार्गदर्शन से कोई भी किसान रासायनिक खेती की चुनौतियों को पीछे छोड़कर, जैविक खेती के माध्यम से खुशहाली और सफलता प्राप्त कर सकता है। वह आज अपने क्षेत्र के अन्य किसानों के लिए एक प्रेरणास्रोत बन गए हैं।

महाकौशल क्षेत्र जिला कटनी के ढीमरखेडा ब्लॉक में औषधीय फ़सल अश्वगंधा की धूम

मानव जीवन विकास समिति द्वरा संचालित नाबार्ड नॉन - वाड़ी परियोजना के तहत कटनी जिले के ढीमरखेडा ब्लॉक में 100 किसानों को अश्वगंधा का बीज दिया गया था| यह पुरे महाकौशल क्षेत्र में पहली बार किसी जिले में औषधिय फसल अश्वगंधा की फ़सल की गयी थी | परियोजना तहत ढीमरखेडा ब्लाक के 8 गाँव

कोठी (20 किसान) **हर्रई (13 किसान)** **छाहर (16 किसान)** **दैगवा (11 किसान)**

सगौना (15 किसान) **दियागढ़ (10 किसान)** **उमरपानी (8 किसान)** **सिवनी (7 किसान)**

ने अश्वगंधा की फसल लगाई थी | जिसकी उपज एवं मुनाफा कई वर्षों से कर रहे गेहू , चना ,धान से काफी अच्छा हुआ है | इस उपलब्धि से पुरे ब्लाक के किसानों में अश्वगंधा फसल की रुचि और बढ गयी | इन 100 किसानों में है अश्वगंधा की खेती करने वाले ग्राम कोठी के किसान की सफलता की कहानी कुछ इस प्रकार है |

सफलता की कहानी

- **परियोजना का नाम:** नाबार्ड नॉन बॉडी परियोजना |
- **सहयोगी संस्था:** मानव जीवन विकास समिति |
- **हितग्राही का नाम:** कृष्ण चंद्र मरावी/ इश्वरी चन्द्र मरावी |
- **स्थान:** ग्राम कोठी, ब्लॉक ढीमरखेडा , जिला कटनी (मध्य प्रदेश) |

01 सामान्य परिचय

कृष्ण चंद्र मरावी ग्राम कोठी, ब्लॉक ढीमरखेड़ा, जिला कटनी के एक प्रगतिशील किसान हैं। पूर्व में वे पारंपरिक फ़सलों जैसे धान और गेहूँ ,चना की खेती करते थे, जिससे आय सीमित थी और परिवार की आर्थिक स्थिति मज़बूत नहीं हो पा रही थी। मानव जीवन विकास समिति द्वारा नाबार्ड नॉन बॉडी परियोजना के अंतर्गत औषधीय एवं जैविक खेती का प्रशिक्षण आयोजित किया गया, जिसने कृषक को नई दिशा दी।

02 संस्था से जुड़ाव एवं जैविक पद्धति अपनाना

मानव जीवन विकास समिति के मार्गदर्शन में कृष्ण चंद्र मरावी ने 0.25 एकड़ भूमि पर अश्वगंधा की फ़सल पूरी तरह जैविक विधि से लगाई। उन्होंने रासायनिक उर्वरक व कीटनाशक का उपयोग न करते हुए निम्न जैविक उत्पादों का प्रयोग किया -

- जीवामृत – मिट्टी की उर्वरता बढ़ाने हेतु।
- नीमास्त्र एवं मठास्त्र – कीट एवं रोग नियंत्रण हेतु।
- वर्मी कम्पोस्ट खाद – पौधों के पोषण हेतु।

03 उत्पादन एवं आय विवरण (अश्वगंधा)

विवरण	विवरण	दर (₹/किलो)	कुल आय (₹)
सूखी जड़	25 किलो	250	₹ 6,250
बीज उत्पादन	15 किलो	200	₹ 3,400
कुल आय (अश्वगंधा)			₹ 9,650

04 कृषि वैज्ञानिक, नाबार्ड अधिकारियो तथा अन्य कृषि अधिकारियो तथा अन्य संस्था के लोगी की लगातार विजिट

अश्वगंधा की खेती पहली बार जबलपुर संभाग के किसी जिले में की गयी थी तो फ़सल के दौरान ये हमेशा से आकर्षण का केंद्र बनी रही। इस दौरान लगातार नाबार्ड डीजीएम भोपाल डॉ. सुशील कुमार सर, नाबार्ड डीडीएम डॉ विकास कुमार जैन सर, डीडीए कटनी मनीष मिश्रा सर, मानव जीवन विकास समिति सचिव श्री निर्भय सिंह सर जैसे अधिकारियों की विजिट ने पूरे जबलपुर संभाग के किसानों को अश्वगंधा की खेती और मोड़ा।

05 अन्य फ़सल गतिविधि (हल्दी की खेती)

अश्वगंधा की सफलता से प्रेरित होकर किसान ने परियोजना तहत 0.25 एकड़ भूमि पर हल्दी की फ़सल भी लगाई, जो पूर्णतः जैविक पद्धति से की गई है। जो की जून माह में लगाई लगाई गयी है। क़रीब 10 -12 माह किसान हल्दी की खेती इस प्रकार का उत्पादन होने की संभावना है।

- अनुमानित उत्पादन: 3 क्विंटल (300 किलो)
- बाजार मूल्य: ₹60 प्रति किलो
- कुल संभावित आय: 300 × 60 = ₹18,000/-

05 जैविक खाद (वर्मी कम्पोस्ट) का उपयोग

परियोजना के अंतर्गत किसान को एक वर्मी बेड प्रदान किया गया।इससे उन्होंने लगभग 20 क्विंटल (2000 किलो) वर्मी कम्पोस्ट तैयार की, जिसे खेतों में उपयोग किया गया। यदि इस खाद का बाजार मूल्य देखा जाए तो...

- दर: ₹15 प्रति किलो
- कुल मूल्य: 2000 × 15 = ₹30,000/-

इस प्रकार किसान ने अपनी मिट्टी की उर्वरता को बनाए रखते हुए, जैविक उत्पादन क्षमता में वृद्धि की।

06 कुल अनुमानित वार्षिक लाभ

घटक	आय (₹)
अश्वगंधा फ़सल	₹9,650/-
हल्दी फ़सल (अनुमानित)	₹18,000/-
वर्मी कम्पोस्ट (स्व-उत्पादन मूल्य)	₹30,000/-
कुल	₹57,650/-

07 हितग्राही का अनुभव

"नाबार्ड और मानव जीवन विकास समिति की सहायता से मैंने जैविक खेती अपनाई। अश्वगंधा और हल्दी दोनों फ़सलों से मुझे अच्छा लाभ हुआ। वर्मी कम्पोस्ट ने मेरी मिट्टी को उपजाऊ बनाया और फ़सलों की गुणवत्ता बढ़ाई। अब मैं पूरी तरह जैविक खेती की ओर अग्रसर हूँ।"
- कृष्ण चंद्र मरावी, ग्राम कोठी, ब्लॉक ढीमरखेड़ा, जिला कटनी (म.प्र.)

08 निष्कर्ष

नाबार्ड नॉन बॉडी परियोजना के अंतर्गत मानव जीवन विकास समिति के सहयोग से कृष्ण चंद्र मरावी ने औषधीय एवं जैविक खेती के माध्यम से अपनी आजीविका में महत्वपूर्ण सुधार किया है।उनकी सफलता यह दर्शाती है कि जैविक खेती पर्यावरण के अनुकूल होने के साथ-साथ आर्थिक रूप से भी लाभदायक है। यह कहानी अन्य किसानों के लिए एक प्रेरणादायक उदाहरण है।

डुकरसता – जंगल के भीतर उम्मीद की नई बगिया

दमोह जिले के तेंदुखेड़ा ब्लॉक से लगभग 3 किलोमीटर अंदर बसा गाँव डुकरसता, आज प्राकृतिक खेती की एक प्रेरणादायक मिसाल बन चुका है। यहाँ मानव जीवन विकास समिति पिछले छह वर्षों से निरंतर कार्य कर रही है। समिति ने BRLF परियोजना के तहत किसानों को प्राकृतिक खेती और गैर-कीट प्रबंधन की तकनीकों पर प्रशिक्षण दिया, जिससे किसानों के खेती करने के तरीक़े में बड़ा बदलाव आया है।

जैविक खेती की दिशा में ठोस क़दम

आज गाँव के अधिकांश किसान स्वयं वर्मी कम्पोस्ट, घन जीवामृत और डी-कंपोजर तैयार करते हैं और अपने खेतों में जैविक विधियाँ अपनाकर फ़सलों की गुणवत्ता और मिट्टी की सेहत सुधार रहे हैं।

बीज उत्पादन और बीज बैंक की स्थापना

प्राकृतिक खेती के साथ किसानों ने "अपना बीज स्वयं तैयार करना" भी सीख लिया है। इससे न केवल उनकी लागत में कमी आई, बल्कि गाँव में बीज आत्मनिर्भरता भी विकसित हुई है। हाल ही में दूसरे प्रोजेक्ट के सहयोग से किसानों ने सब्जी उत्पादन में भी क़दम बढ़ाया है। मानव जीवन समिति की ओर से तीन हज़ार फलदार पौधे-जैसे - जमुन, सीताफल, महुआ, आम और पपीता-भी किसानों को दिए गए, जिससे इनकी आमदनी में स्थायी बढ़त आई।

गाँव में आज जैव विविधता का अनूठा नजारा मिलता है: फूलों और फल के पौधों पर मधुमक्खियाँ, तितलियाँ और अन्य मित्र कीट दिखाई देते हैं, जो पर्यावरण के संतुलन एवं प्राकृतिक खेती के फ़ायदे को दर्शाते हैं। गाँव के लोग पर्यावरण की रक्षा के साथ आजीविका सुधारने में जुटे हैं।

गाँव में ऐसी मिसाल पेश करने वाले कुछ किसान, जैसे-बड़ी बहू, बाबूलाल, गिरन और भगवान दास एक एकड़ से ज़्यादा भूमि को जैविक बनाने की कोशिश कर रहे हैं। इनकी आय भी हर महीने 500 से 1000 रुपये तक बढ़ी है। सभी किसान अपनी सफलता का श्रेय मानव जीवन विकास समिति को देते हैं, और नए-नए कृषि तरीकों कों सीखने को तत्पर रहते हैं। ये आज दिखता है।

आज डुकरसता गाँव में मानव जीवन विकास समिति के प्रयासों का परिणाम स्पष्ट दिखता है किसान न केवल अपनी खेती में आत्मनिर्भर हुए हैं, बल्कि उन्होंने प्राकृतिक खेती के माध्यम से पर्यावरण को भी समृद्ध किया है।

भूमि के संघर्ष से जैविक खेती तक का सफ़र

प्रस्तावना- कुछ साल पहले जहाँ जंगल हुआ करता था वहाँ आज लहलहती हुआ फ़सल नज़र आ रही है। उस फ़सल को देख कर किसानों के चेहरे में ख़ुशी की झलक दिख रही है। हम बात कर रहे है ग्राम पटेरिया माल एक आदिवासी बाहुल्य ग्राम है जो ग्राम पंचायत समदई ब्लॉक तेंदूखेड़ा जिला दमोह मध्यप्रदेश के अंतर्गत आता है! इस गाँव को बसाने का श्रेय श्री पटैल भागुन्ट सिंह पिता श्री चुरामन सिंह गौंड के द्वारा सन 1600 के आस पास इस गाँव की स्थापना की गई थी फिर धीरे धीरे अन्य दूसरे आस पास के गाँव के एक-एक दो-दो परिवार आकर बस गए और गाँव एक बस्ती मे बदल गया जिसमें आज 150 परिवार का गाँव है जो मोहल्ला, टोला मे बसा हुआ है। जिसमे 90% आदिवासी परिवार 4% हरिजन 6% पिछड़ा वर्ग के लोग निवास करते है! एवं उनके जीवन यापन का एक मात्र साधन जंगल है। जो जंगल से लकड़ी, महुआ, अचार, चारा, लाकर पास के गाँव के बाज़ार में बेच कर अपना जीवन यापन करते थे। धीरे-धीरे जंगल को काट कर जंगल की लकड़ी बेच कर उस जमीन पर खेती करना शुरू किया जिसमे सभी ने थोड़ी थोड़ी जमीन पर वर्षा आधारित खेती करना शुरू किया।

जो वर्षा पर ही निर्भर रहते थे। में इसलिए यहाँ के लोग सिर्फ़ बरसात की हीं फ़सल लेते थे बाकि फ़सल नहीं ले पाते थे! इस गाँव के सभी लोग दूसरे राज्य व ज़िला मे मज़दूरी करने परिवार के साथ निकल जाते थे। जिससे बच्चों की शिक्षा और स्ववास्थ पर बहुत बुरा असर पड़ रहा था। इसके बाद सन 1972 मे प्राथमिक शाला स्कूल खोला गया जिससे गाँव मे बच्चों को शिक्षा प्राप्त होने लगी लेकिन अभी भी पलायन नहीं रुका पलायन की स्थाती मे सुधार लाने के लिए लोगो ने खेती करना शुरू किया! सन 1980 मे 45 परिवारों ने एक संगठन बनाया और जंगल की 125 एकड़ जमीन पर कब्ज़ा किया। जो कृषि योग्य भूमि थी जिसमें गाँव के लोगो के साथ एकता परिषद संस्था एक गैर सरकारी संगठन है जो जल जंगल और जमीन के मुद्दों पर काम करता है जिसके संस्थापक श्री राजागोपाल P. V. के मार्गदर्शन मे जल, जंगल, और ज़मीन को लेकर गाँव के लोगो के साथ बहुत संघर्ष किया जनादेश 2007 मे ग्वालियर से दिल्ली पैदल पद यात्रा किया। इतना संघर्ष करने के बाद सन 2012 में 45 परिवार को 125 एकड़ वन भूमि का अधिकार पत्र प्राप्त हुआ जिसमें लोगों का पलायन रुका और अपनी ज़मीन पर खेती करना शुरू किया जिससे अब बच्चों की शिक्षा और स्ववास्थ पर काफ़ी सुधार हुआ।

नई राह की किरण के साथ इसके बाद सन 2018 मे मानव जीवन विकास समिति संस्था ने गाँव मे कार्य करना शुरू किया गाँव के लोगों के साथ मिलकर लोगों की एक सुनिश्चित स्थाई आजीविका खड़ी हो एवं गाँव मे पानी की अधिक समस्या होने के कारण खेती मे तीनो फ़सल नहीं ले पा रहे थे। जिससे संस्था सचिव श्री निर्भय सिंह सर जी के मार्गदर्शन मैं कार्यकर्ताओं के द्वारा शासन प्रशासन की योजनाओं से लोगों को जोड़कर एवं लोगों को योजनाओं से लाभान्वित किया एवं ग्राम पंचायत मे ग्राम सभा मे गाँव के लोगो से भूमि विकास जल संरक्षण का प्रस्ताव डलवाया गया, जिसमें ग्राम पंचायत ने अपनी सक्रिय भूमिका को निभाते हुए लोगों की जमीन में मेड़ बंधन, खेत तालाब, कुआँ, जैसे कार्यों को किया गया। संस्था के कार्यकर्ताओ ने गाँव मे जाकर बैठक कर लोगो को जैविक खेती को बढ़ावा देते हुए लोगो को जैविक खेती के फ़ायदे और रासायनिक खेती से हो रहे नुकसान के बारे मे बताया कि अभी आप खेती में रसायन खेती कर रहे हैं जिसमें लागत अधिक एवं उत्पादन कम हो रहा है और अपना खेत का मिट्टी बेकार होते जा रहा है एवं लोगो को कई प्रकार की बीमारियों का सामना करना पढ़ रहा है जिससे आप जो अभी मज़दूरी करके पैसा कमाते हैं वो पैसा बीमार होने से डॉ को देकर आ जाते शरीर मे पहले जैसे क्षमता नहीं रही है।

जैविक खेती

पहले हमने NPM (नान पेस्ट्रीसाइड मैनेजमेंट) खेती करने की बात को रखा कि आप अपनी खेती मे DAP, यूरिया कम मात्रा मे डाल सकते हैं लेकिन केमिकल का छिड़काव नहीं कर सकते केमिकल से आपको व खेत की मिट्टी को बहुत नुकसान है लोगो ने इस बात को स्वीकारा और हमारे साथ हमारे मार्गदर्शन मे खेती करना शुरू कि।

पिछले 2 वर्षों से गाँव के 48 किसान जैविक खेती कर रहे हैं जिसमे खेत पर बनाया भू-नाडेप, वर्मी कम्पोस्ट, सुपर कम्पोस्ट, खाद तैयार करके खेती कर रहे हैं व जैविक दवाई जैसे अग्निस्त्र, नीमस्त्र, मट्ठास्त्र, ब्रम्हस्त्र, फूल बर्धक, मटका खाद, आदि दवाई घर पर बना कर अपनी खेती कर रहे हैं जिससे किसान की लागत कम हुई और शुद्ध भोजन खाने को मिल रहा है किसान की आर्थिक स्थति मे भी बहुत परिवर्तन हुआ और दूसरे गाँव के लोगो ने भी धीरे-धीरे जैविक खेती करना शुरू किया । अन्य गाँव के किसानों के लिए प्रेरणा स्त्रोत बने।

खेती और स्व रोज़गार - किसान सोने सींग की कहानी

किसान सोने सिंह गोंड पिता दुर्जन सिंह गोंड ग्राम डेलनखेड़ा में निवास करते हैं घर की पूरी आजीविका खेती पर ही निर्भर है उनकी 20 एकड़ जमीन है जहाँ वह खेती करते हैं। मानव जीवन विकास समिती ग्रामीण आजीविका के सुधार कार्यक्रम में उन्हें शामिल किया गया जिसमें किसान को जैविक खेती की पूर्ण जानकारी दी गई, जैसे बर्मी खाद, भू नाडेप कैसे बनते है उसके उपयोग तथा फ़सल को होने वाले फ़ायदे भी किसान को समझाय गए। यह भी की रासायनिक खेती की तरह मिट्टी की उर्वरा शक्ति को नष्ट करती रही है और यह पैसे देकर रोग को निमंत्रण है ये बाते धीरे धीरे किसान को समझ आने लगी है। किसान ने अपनी आधी एकड़ के खेत में श्री विधि से धान का रोपण किया साथ ही जैविक दवाइयाँ अग्नि शास्त्र मथास्त्र नीमास्त्र खेत में उपयोग किया जिससे उन्हें कम लागत से अच्छा उत्पादन हुआ वह अपने 20 डिसिमल में सब्जियां उगाते है जो कि पूर्णता जैविक है जैविक खेती से निकलने वाले फसल तथा सब्जियाँ खानें में स्वादिष्ट तथा सेहत के लिए पौष्टिक है उन्होंने इसका अनुभव पिछले 2 से 3 साल में किया किसान अब पूरी तरह से पाँच एकड़ ज़मीन मै जैविक खेती की और मुड़ रहे हैं, इससे उनकी आय बढ़ रही है तथा खाद और दवाइयों पर होने वाले खर्चे में भी बचत हो रही है।

किसान को मानव जीवन विकास समिती के कार्यकर्त्ता के सहयोग से मछली की प्रजाति कतला के 2500 बच्चे 2500 रोहू कुल 5000 बच्चों की क़ीमत 1500,₹ जिससे किसान को आमदनी ₹ 20000 विक्रय किया और अच्छी आमदनी प्राप्त हुई है। जिससे किसान को और भविष्य में किसान इस मछली पालन को बड़े स्तर पर ले जाना चाहते हैं।

रासायनिक खेती से संघर्ष कर जैविक खेती की और एक क़दम

किसान श्री रघुनाथ सिंह गौड/पिता सुम्मेर सिंह गौड इनके परिवार में नौ सदस्य हैं, जो ग्राम हरदुआ तहसील जबेरा जिला दमोह के रहने वाले हैं। किसान रघुनाथ सिंह जी पहले रासायनिक खेती करते थे, जिसमे लागत बहुत अधिक लगती थी फिर भी रासायनिक खेती करना पड़ता था। फिर उसके बाद 2022 मे संस्था मानव जीवन विकास समिति का कार्य शुरू हुआ मानव जीवन विकास समिति संस्था सचिव श्री निर्भय सिंह सर के मार्गदर्शन मे गाँव मे स्थाई अजीविका खड़ी हो गाँव से पलायन रुके विभिन्न प्रकार की गतिविधियाँ शुरू की गई जिसमे कार्यकर्त्ता अर्चना गौड से किसान रघुनाथ जी की मुलाक़ात हुई उसके बाद उनके लिए कार्य कर्ता अर्चना के माध्यम से उनके लिए समय-समय पर जैविक खेती की जानकारी दी गई वा प्रशिक्षण दिया गया जिससे वह प्रेरित होकर उन्होंने जैविक खेती को अपनाया जिसमें गोबर खाद कंपोस्ट खाद का उपयोग करने लगे साथ ही जैविक दवाइयाँ और भू नाडेप खाद का उपयोग करने लगे किसान ने शुरुआती तौर पर किचन गार्डन से शुरुआत की उसके बाद धीरे-धीरे किसान एक एकड़ में खेती करने लगा और इस बार उन्होंने व्यावसायिक स्तर पर सब्जी की खेती को बढ़ावा दिया जिसमें उन्होंने बैंगन, मिर्ची, भिंडी, लौकी, गिलकी इत्यादि सब्जियाँ लगाई और उसमें जैविक कीटनाशक व फूल वर्धक का उपयोग किया और कंपोस्ट खाद का उपयोग किया जिसमे उनकी लागत मे कमी हुई ओर उनके लिए जो बाज़ार से दवाइयाँ लानी पड़ती थी। उसका पूरा पैसा बचने लगा वा वह उनकी आय का एक साधन बना जिससे उनके परिवार का साप्ताहिक खर्चा निकालने लगा और उनके लिए बाहर मजदूरी करने के लिए नहीं जाना पड़ा और उनके लिए शुद्ध जैविक सब्जी घर के उपयोग के लिए भी मिलने लगी ओर उससे जो आमदनी हुई उस आमदनी से किसान ख़ुश होकर किसान ने कहा कि वे आने बाले समय मे रकवा बड़ा कर और सब्जी की खेती करेंगे।

सफलता की कहानी

जनपद पंचायत तेंदूखेड़ा की वनांचल ग्राम पंचायत बगदरी की अनीता बाई गौड एक ग़रीब परिवार की महिला थी। उसके परिवार में 5 सदस्य थे कमाने वाले सिर्फ़ अनीता बाई गौड और हल्ले भाई गौड दोनों मज़दूरी करके परिवार की आजीविका चलाते ग्राम व ग्राम पंचायत बगदरी में मानव जीवन विकास समिति के कार्यकर्त्ताओं के माध्यम से ग्राम विकास समिति गाँव के महिला पुरुषों की गठित की गई उक्त समिति की मीटिंग माह में एक बार और अवश्यकता के अनुसार होती है उक्त समिति मीटिंग सदस्यों से कोरोना लाकडाउन में अनीता बाई गौड ने कहा कि लाकडाउन में कहीं कोई मज़दूरी नहीं मिल रही है ओर कही छुपकर चले जाते हैं तो पुलिस परेशान करती है अगर ग्राम विकास समिति के माध्यम से ओर मानव जीवन विकास समिति के सहयोग से कोई हमारी आजीविका के लिए खाद्य सामग्री व स्थाई आजीविका के साधन बन जाता तो मज़दूरी की कुछ समस्या का समाधान हो जाता समिति सदस्यों ने कार्यकर्ता धनसिंह लोधी के लिए फोन पर जानकारी दी धनसिंह लोधी द्वारा मानव जीवन विकास समिति ब्लॉक समन्वयक घनश्याम प्रसाद रायकवार के लिए सम्पूर्ण जानकारी से अवगत कराया गया। उक्त जानकारी समिति सचिव निर्भय सिंह जी के लिए लिखित में दी गई समिति सचिव के मार्गदर्शन में अनीता बाई गौड के लिए खाद्य सामग्री उपलब्ध कराई गई। साथ ही दो बकरियाँ दी गई उक्त बकरियों से आज 8 नग घर पर है तथा एक बकरा 7000 का बेच दिया गया है। अनीता बाई गौड बकरियों के दूध से मावा बनाकर बेजती है वर्त्तमान में अनीता बाई गौड ने 9200 के मावा बेच लिया है अनीता बाई गौड मानव जीवन विकास समिति के सचिव निर्भय सिंह जी ओर उनकी टीम के लिए सराहती है कि संकट के समय में समिति के लोगों ने हमें सहारा दिया ओर एक स्थाई आजीविका का साधन दिया है जो मेरे जीवन में एक सपना साकार हुआ है, मानव जीवन विकास समिति बहुत अच्छा काम कर रही है। गाँव-गाँव में किसानों ओर ग़रीबों के लिए वरदान स्वरूप है समिति।

"

उठो, जागो और तब तक न रुको जब तक लक्ष्य की प्राप्ति न हो जाए।

- स्वामी विवेकानंद

07 पुरस्कार एवं सम्मान

मानव जीवन विकास समिति को स्थानीय, राज्य, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अनेक पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए हैं, जो ग्रामीण विकास, सामाजिक सशक्तिकरण और सतत आजीविका में इसके उत्कृष्ट योगदान को दर्शाते हैं।

01
वन अधिकार सम्मान

मानव जीवन विकास समिति द्वारा वन अधिकार अधिनियम के तहत, आदिवासी परिवारों को भूमि अधिकारों के लिए सक्षम किया गया, जिससे हज़ारों आदिवासियों को लाभ मिला, इसके लिए यह सम्मान मध्य प्रदेश सरकार द्वारा संस्था को दिया गया।

02
राष्ट्रीय जैविक खेती पुरस्कार

सीमांत किसानों के बीच सतत और प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए।

03
जनजातीय कार्य मंत्रालय सम्मान

ग्रामीण पर्यटन को विकसित कर, आदिवासी समुदायों को सशक्त बनाने के लिए।

04
ग्रामीण स्वास्थ्य में उत्कृष्टता पुरस्कार

आंगनवाड़ी केंद्रों और सामुदायिक स्वास्थ्य का दायरा बढ़ाने के लिए।

05
युवा सशक्तिकरण पुरस्कार

प्रभावशाली व्यावसायिक प्रशिक्षण और रोज़गार कार्यक्रमों के लिए।

सरकारी निकायों, राष्ट्रीय मंत्रालयों और नागरिक समाज संगठनों से प्राप्त ये पुरस्कार मानव जीवन विकास समिति के बहु-क्षेत्रीय प्रभाव और सहयोगात्मक सफलता को उजागर करते हैं। इन पुरस्कारों ने संगठन की प्रतिष्ठा और विश्वसनीयता को बढ़ाने तथा नई साझेदारियों और व्यापक पहुँच को प्रोत्साहित करने में मदद की है।

06

बारडोली रत्न

पर्यावरण के क्षेत्र मे - वर्ष 2002 में

07

होनहार पुरस्कार

सामाजिक कल्याण के क्षेत्र मे - वर्ष 2009 में

08

स्वामी विवेकानंद और सिस्टर मार्गरिट आवार्ड

सामाजिक कल्याण के क्षेत्र में - वर्ष 2017 में

09

तिलका मांझी राष्ट्रीय सम्मान

समाज सेवा और लोक प्रबंधन के क्षेत्र में - वर्ष 2018 में

10

प्रशस्ति पत्र

कोरोना योद्धा सेवा सम्मान - वर्ष 2020 में

11

समाज रत्न सम्मान

समाज मे उत्कृष्ट कार्य करने पर - वर्ष 2020 में

12

प्रशस्ति पत्र

लघु उद्यान (मिलेट) फसलों के उत्पादन में उत्कृष्ट कार्य पर - वर्ष 2023 में

13

स्वयंसेविता गौरव सम्मान

सामाजिक विकास के मुद्दों पर उत्कृष्ट कार्य पर - वर्ष 2023 में

14

प्रशस्ति पत्र

पर्यावरण शिक्षण कार्य पर - वर्ष 2024 में

15

प्रशस्ति पत्र

राष्ट्रीय पर्यावरण सेवी सम्मान - वर्ष 2024 में

16

प्रशस्ति पत्र

राष्ट्रीय पर्यावरण सेवी सम्मान - वर्ष 2024 में

17

सेवा सम्मान प्रशस्ति पत्र

बाढ़ आपदा से सुरक्षा के क्षेत्र में - वर्ष 2025 में

18

प्रशस्ति पत्र

जल गंगा सम्वर्द्धन अभियान मे उत्कृष्ट कार्य में - वर्ष 2025 में

19

प्रशस्ति पत्र

औषधीय फ़सलों की खेती पर - वर्ष 2025 में

20

प्रशस्ति पत्र

जैविक उत्पाद पर - वर्ष 2025 में

21

कम्युनिटी रेसिलेंस अवार्ड (कोविड-19)

कई राज्यों में त्वरित और प्रभावी राहत कार्य के लिए।

“
असफलता मुझे तब तक नहीं मिल सकती, जब तक मेरी सफलता पाने की इच्छा मज़बूत है।

- अब्दुल कलाम

08 कार्यकर्त्ताओं के अनुभव और कहानियाँ

अभय कुमार पटेल

अकाउंट मैनेजर

मैं समिति मे अगस्त 2008 से मुख्य रूप से वित्तीय प्रबंधन के दायित्व में हूँ। समिति के 25 वर्ष पूर्ण होने में मेरे 17 वर्षों के कार्यकाल विकासशील से विकसित दौर में स्वयं की थोड़ी बहुत भूमिका का बोध अत्यंत आनंदमय रहा। यहाँ आने के बाद कहीं और जाने का विचार महसूस नहीं हुआ क्योंकि अनुकूल कार्य के साथ आदरणीय श्री निर्भय सिंह जी का स्नेह व मार्गदर्शन मेरे सफ़र व काम को आसान बना दिया। समिति अपने उद्देश्यों एवं प्रयास के अनुरूप निरंतर आगे बढ़े ऐसी कामना के साथ आप सभी को समिति की 25 वी वर्षगांठ की हार्दिक शुभकामनाएँ व बधाई।

चंद्रपाल कुशवाहा

कार्यक्रम प्रबंधक

मैं वर्ष 2020 में मानव जीवन विकास समिति का हिस्सा बना तब से मैं MJVS को दिन प्रतिदिन विकास के पथ पर आगे बढ़ते देख रहा हूँ। संस्था ने स्थाई कृषि, भूमि एवं जल संरक्षण, स्थाई आजीविका और ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देने एवं सरकारी योजनाओं तक लोगों की पहुँच सुनिश्चित करने में अहम भूमिका निभा रही है। संस्था के विषयगत क्षेत्र के साथ भौगोलिक कार्यक्षेत्र में भी बढ़ोत्तरी हुई है। जब मैं समिति से जुड़ा उस समय संस्था का कार्य दमोह जिले के 50 गाँव में था और लगभग 20 लोगों की टीम थी उसके बाद वर्तमान में देखें तो 250 से भी ज़्यादा गावों में समुदाय के उत्थान हेतु कार्य कर रही है जिसमें 60 कार्यकर्त्ता एवं 1000 से ज्यादा स्वयंसेवक अपनी सहभागिता निभा रहे है। संस्था ने आज राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी अलग पहचान बनाई है जो अभूतपूर्व है। मुझे ख़ुशी है कि मैं MJVS के 25 वर्षों की यात्रा का एक छोटा सा हिस्सा बन पाया हूँ और समुदाय के विकास में अपनी भूमिका सुनिश्चित कर पाया मैं MJVS की इस सफलता के लिए सभी साथियों को बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ।

सोनम निशा
अकाउंटेंट

मैं 15 फरवरी 2022 से मानव जीवन विकास समिति में कार्यरत हूँ। यहा मुझे मुख्य रूप से वित्तीय संबंधित कार्यों का दायित्व मिला और समिति में संचालित विभिन्न परियोजनाओं व अन्य कार्यों में मेरी भूमिका रही है। यहाँ मुझे बहुत कुछ जानने और सीखने को मिला है, हमारे काम करने की सोच व अनुभव भी बढ़ा है। समिति का कार्य मुख्यतः आदिवासी व ग्रामीण क्षेत्रों में स्थायी आजीविका सुनिश्चित करना व आजीविका के संसाधन उपलब्ध कराना है। इसके आलावा महिला सशक्तिकरण, पर्यावरण संरक्षण जैसे मुद्दों पर भी कार्य कर रही है जो हमें समाजसेवा के लिए प्रेरणा देती है। समिति में काम करने का मुझे फ्री–स्पेस मिला व टीम वर्क अच्छा है। मुझे ख़ुशी है कि मैं समिति के इस यात्रा में एक छोटा सा हिस्सा बनी। मानव जीवन विकास समिति को 25 वीं स्थापना दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं।

पूनम शर्मा
अकाउंटेंट

मुझे ख़ुशी है कि मानव जीवन विकास समिति अपना 25 वा स्थापना दिवस मना रही हू, और मैं उसका छोटा सा हिस्सा बन पा रही हूँ। पिछले 2 वर्ष से मैं समिति से जुड़कर वित्तीय संबंधित कार्य, डेटा एंट्री एवं अन्य कार्यों में लगी हूँ जो हमें प्रतिदिन प्रेरणा देती है कि कैसे हम ग़रीब, असहाय, वंचित, छोटे एवं सीमांत किसानों की मदद कर रहे हैं और लोगों की आजीविका में सुधार हेतु लगातार प्रयासरत है। समिति में जुड़ने से पहले मैं समाज सेवा कार्य के बारे में जानती भी नहीं थी परन्तु लेकिन यहाँ जुड़ने के बाद मुझे महसूस हुआ की कितना अच्छा कार्य है और यह कार्य मन को एक सुकून देता है कि हम किसी जरूरतमंद की मदद कर पा रहे है। मानव जीवन विकास समिति संस्था को 25 वें वर्षगांठ की हार्दिक शुभकामनाएँ देती हूँ।

रिया तिवारी
अकाउंटेंट

मैं मानव जीवन विकास समिति का धन्यवाद करती हूँ कि मुझे इस संस्था का हिस्सा बनने का मौक़ा मिला, मुझे यहाँ पर बहुत तो नहीं पर 4 महीने हो गए। पर इन चार महीनों में मुझे बहुत कुछ देखने और सीखने को मिला और MJVS के 25 वीं वर्षगांठ का एक छोटा सा हिस्सा बन पाई। मुझे इस संस्था में समानता की दृष्टि बहुत अच्छी लगी।और किसी भी प्रकार का भेदभाव देखने को नहीं मिला और यह काम करके बहुत ख़ुशी मिली। मैं समिति के 25 वीं वर्षगांठ को सफलतापूर्वक पूर्ण होने की बधाई देती हूँ। और निरंतर सभी के साथ मानव विकास के लिए आगे बढ़ने की कामना करती हूँ।

घनश्याम प्रसाद रायकवार

ब्लॉक समन्वयक

मानव जीवन विकास समिति वर्ष 2000 में गठित एक सामाजिक गैर सरकारी संगठन है यह संगठन पिछले 25 वर्षों से अपने उद्देश्यों के प्रति सजग रहते हुए ग्रमीण क्षेत्रों में वंचितों के लिए अथक प्रयास करते हुए श्री पी, बी,राजगोपाल जी के उद्देश्यों व श्री निर्भय सिंह जी के मार्गदर्शन में ग्लोबल वार्मिंग जलवायु परिवर्तन को ध्यान में रखकर प्राकृतिक संसाधन जल जंगल ज़मीन आधारित लोगों की आजीविका खड़ी हो गाँव में लोगों की लोगों के साथ लोगों में श्रमदान आधारित कार्यों को आगे बढाते हुए, आत्मविश्वास स्वास्थ्य, शिक्षा, महिला, पुरुषों में समानता रोज़गार उन्मुखीकरण आधारित नवांचार पर कार्यों को गति प्रदान करने में मानव जीवन विकास समिति आगे बढ़ रही है एक व्यापक ग्रामीण परिवारों के साथ।

अनिल कर्मा

ब्लॉक समन्वयक

मैं मानव जीवन विकास समिति के साथ पिछले तीन वर्षों से ब्लॉक कोऑर्डिनेटर के पद पर कार्यरत हूँ। इस अवधि में संगठन के मार्गदर्शन में मुझे सीखने, समझने और समुदाय के बीच काम करने के अनेक अवसर प्राप्त हुए। इन तीन वर्षों के अनुभव ने न केवल मेरी कार्यक्षमता को मज़बूत किया, बल्कि ग्रामीण समुदाय के प्रति मेरी समझ और संवेदनशीलता को भी बढ़ाया है। समुदाय, किसानों, महिलाओं, युवा समूहों तथा संगठन की टीम के साथ निकटता से काम करते हुए मैंने विकास कार्यों की जमीनी ज़रूरतों को समझा और उन पर प्रभावी रूप से कार्य किया। संगठन के साथ रहते हुए मेरा कौशल कृषि, आजीविका, प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन और नीति समझ के क्षेत्रों में विकसित हुआ। में आज मानव जीवन विकास समिति परिवार में कार्य करके बहुत खुश हूँ।

राकेश विश्वकर्मा

ब्लॉक समन्वयक

पिछले 15 वर्षों से, मैंने अपना जीवन विभिन्न NGO सेक्टरों को समर्पित किया है, लेकिन 2022 में आया, जब मैं मानव जीवन विकास समिति (MJVS) से जुड़ा। हमने गाँव की कम्युनिटी के साथ ग्राम के विकास के लिए योजना ग्रामीणों के साथ मिलकर बनाने की योजना पर कार्य किया। लोगों के साथ मिलकर योजना में ज़रुरत के हिसाब से कार्य को प्राथमिकता के आधार पर रखना आवश्यकताओं को समझा और स्थाई आजीविका स्थापित करने की योजना बनाई। शासन-प्रशासन के साथ मिलकर उन लोगो के साथ योजनाओं का जुड़ाव किया जो पात्र बधाई के है मानव जीवन विकास समिति (MJVS) पर गर्व है, जो हमेशा अंतिम व्यक्ति के सहयोग के लिए तत्पर खड़ी रहती है। संस्था के सचिव, श्री निर्भय सिंह सर, का समय-समय पर मिलने वाला मार्गदर्शन मेरे कार्य को अत्यंत सरल और प्रभावी बनाता है मैं संस्था का आभारी हूँ।

नरेश खटीक

परियोजना समन्वयक

मैंने समाज कार्य में MSW की पोस्ट ग्रेजुएशन की पढ़ाई पूरी की है। पिछले 13 वर्षों से, मैंने अपना जीवन विभिन्न NGO सेक्टरों को समर्पित किया है, लेकिन मेरे करियर का सबसे महत्वपूर्ण पड़ाव वर्ष 2019 में आया, जब मैं मानव जीवन विकास समिति (MJVS) से जुड़ा। मैंने वन अधिकार अधिनियम के बारे में गहराई से सीखा संस्था के सहयोग से, हमने उन समुदायों को उनके हक के प्रमाण पत्र दिलाने में सफलता पाई, जिनका 2005 से पहले से जंगल की ज़मीन पर कब्ज़ा था। शासन-प्रशासन के साथ मिलकर किए गए इन प्रयासों के परिणामस्वरूप, ग्रामीणों की आर्थिक स्थिति में वास्तविक सुधार आया। गाँव के उस अंतिम व्यक्ति की मदद करने और उसके जीवन में सकारात्मक बदलाव लाने से मुझे जो असीम ख़ुशी मिलती है, उसे शब्दों में बयाँ नहीं किया जा सकता। मुझे मानव जीवन विकास समिति (MJVS) पर गर्व है, जो हमेशा अंतिम व्यक्ति के सहयोग के लिए तत्पर खड़ी रहती है। संस्था के सचिव, श्री निर्भय सिंह सर, का समय-समय पर मिलने वाला मार्गदर्शन मेरे कार्य को अत्यंत सरल और प्रभावी बनाता है मैं संस्था का आभारी हूँ कि उन्होंने मुझे इस कार्य के लिए चुना।

अजय फुलसुंगे

परियोजना समन्वयक

समिति के साथ परियोजना समन्वयक के रूप में मेरा एक वर्ष पूरा होना मेरे लिए गर्व और सीख दोनों का समय रहा है। इस एक साल में मुझे यह समझने का अवसर मिला कि MJVS केवल एक संस्था नहीं, बल्कि समाज की बेहतरी के लिए समर्पित एक मज़बूत परिवार है। समिति के सचिव निर्भय सिंह सर के प्रभावी नेतृत्व और स्पष्ट दृष्टि ने मुझे हर क़दम पर प्रेरित किया। उनके मार्गदर्शन में काम करते हुए मैंने देखा कि सही दिशा, सही प्रशिक्षण और सही सलाह कैसे किसानों के जीवन में वास्तविक परिवर्तन ला सकती है। आज जब MJVS अपनी 25वीं वर्षगांठ मना रही है, मुझे गर्व है कि मैंने इस संस्था के साथ अपने विकास का यह महत्वपूर्ण पहला वर्ष पूरा किया है। आने वाले समय में भी मैं इसी समर्पण और उत्साह के साथ समिति के मिशन को आगे बढ़ाने का प्रयास करता रहूँगा।

अर्चना गौड

फील्ड समन्वयक

मानव जीवन विकास समिति एक गैर सरकारी संगठन है इसका उद्देश्य युवाओं के अधिकार, बाल अधिकार, महिला सशक्तिकरण, शिक्षा और स्वास्थ्य के ऊपर कार्य कर रही है तथा लोगों की स्थाई आजीविका स्थापित हो गाँव के पिछड़े समुदाय के अंतिम व्यक्ति तक सरकार की योजनाएँ पहुँचे और लाभ मिले ताकि उनके जीवन स्तर में सुधार हो सके। समिति के साथ काम करने का अच्छा अनुभव रहा विविध प्रकार के प्रशिक्षणों से हमारा क्षमतावर्धन हुआ है और हम अपनी सीख का उपयोग फील्ड में कर रहे हैं।

गुलशन सिंह रुहेल

फील्ड समन्वयक

समिति के विकास में राजा जी जैसे अहिंसावादी व अंत्योदय सेवा के सिद्धांतों को अपनाते हुए MJVS सचिव श्री निर्भय सिंह जी की समाजसेवा को समर्पित उनकी जीवन के अमूल्य साधना का प्रतिफल एवं समिति से जुड़े उन सभी सदस्यों का आपसी समन्वय, प्रेम व विश्वास को जाता है, जिसके कारण समाज सेवा के क्षेत्र में अपने कार्यों को राष्ट्रीय स्तर पर पहचान मिली है।
फरवरी 2022 से एक कार्यकर्त्ता के रूप में मुझे संस्था से जुड़ने का अवसर मिला और शुरुआती दिनों में ही श्री निर्भय सिंह जी का कार्यकर्ताओं के प्रति प्रेम एवं विश्वास के साथ में उनके मार्गदर्शन में हर चुनौतियों से निपटने, विभिन्न प्रकार की जानकारियों के लिए, कौशल विकास के विभिन्न प्रशिक्षणों के लिए विभिन्न राज्यों में भेजकर आंतरिक सशक्त बनाया। मानव जीवन विकास समिति की गौरव गाथा के आज 28 नवंबर 2025 को 25 वर्ष पूरे होने पर बहुत-बहुत बधाई एवं शुभकामनाएँ ऐसे ही यह यात्रा निरंतर चलती रहे। जय जग।

अदिति वैष्णव

फील्ड समन्वयक

समिति में कार्य करते मेरे तीन वर्ष पूर्ण हुए, यहाँ मुझे काफ़ी सारे नए अनुभव प्राप्त हुए हैं जहाँ समुदाय के साथ जुड़ने और उनके हित में कार्य करने क़ा मौका मिला जहां प्राकृतिक खेती, सरकारी योजनाओं, महिला समूहों के साथ जुड़ कर काम किया और बहुत कुछ सीखा जिसमें समिति के सचिव श्री निर्भय सिंह जी के द्वारा मार्गदर्शन किया गया उनसे बहुत कुछ सीखने को मिला। समाज को मज़बूत बनाना लोगो को स्वयं में आत्मनिर्भर बनाना साथ ही मुझे व्यावहारिक ज्ञान भी मिला है, लोगो की दुःख दर्द को समझना सीखा। समिति समाज को आगे बढ़ाने के लिए प्रयासरत है। आज मानव जीवन विकास समिति 25वी वर्षगांठ मना रही हे मुझे गर्व है कि में इस संस्था के साथ कार्य कर रही हूँ आने वाले समय में भी इसी तरह समर्पण और लगन के साथ कार्य करती रहूँगी. MJVS को 25वी वर्षगांठ की हार्दिक शुभकामनाएँ।

भारती सिंह

फील्ड समन्वयक

मानव जीवन विकास समिति से मैं पिछले 3 वर्ष से जुड़ कर फील्ड समन्वयक के पद पर कार्य कर रही हूँ यहाँ मुझे काफ़ी सारे नए अनुभव हुए हैं जहाँ समुदाय के साथ जुड़ने और उनके हित में कार्य करने का मौक़ा मिला जहाँ प्राकृतिक खेती, सरकारी योजनाओं, महिला समूहों के साथ जुड़कर काम किया और बहुत कुछ सीखा जिसमें समिति के सचिव श्री निर्भय सिंह जी के द्वारा मार्गदर्शन किया गया उनसे बहुत कुछ सीखने को मिलता है संस्था में सभी साथी कार्यकर्ता बहुत सहयोगी हैं जहाँ हम सब एक परिवार की तरह एक दूसरे का साथ देते हैं और भविष्य में भी इसी तरह संस्था के साथ समाज तथ समुदाय के विकास के लिए कार्य करते रहें। मैं मानव जीवन विकास समिति की 25 वे स्थापना दिवस पर सहृदय बहुत-बहुत बधाई और शुभकामनाएँ देती हूँ।

राम किशोर चौधरी
कार्यक्रम समन्वयक/डाक्यूमेंटेशन

मैं वर्ष 2010 से लगातार समिति के साथ कार्यरत हूँ और पिछले 15 वर्षों में विभिन्न परियोजनाओं व गतिविधियों में सहभागिता करने का मौक़ा मिला। समिति समर्थको के सहयोग से हमने अपनी इस डेढ़ दशक की यात्रा को सफल बनाया है। मुझे ख़ुशी होती है कि मैं समिति के इस 25 वर्ष की सफलतम यात्रा का हिस्सा रहा। मैं डाक्यूमेंटेशन, सोशल मीडिया, प्रलेखन और रिपोर्ट लेखन कार्य को प्रमुखता से देखता हूँ। कई प्रकार के रिपोर्ट लिखते समय मुझे हमारे काम की गहराई और महत्व का बेहतर एहसास हुआ और विविध कार्यों से हमारा निजी अनुभव भी बढ़ा है। समिति ने स्थानीय, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर समाज सेवा के कार्यों में अच्छी पहचान स्थापित की है। समिति के पास एक विशाल परिसर और प्रचुर संसाधन है जिसकी सहायता से प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण के क्षेत्र में भी समर्थित है। मैं समिति को 25 वीं वर्षगांठ की हार्दिक शुभकामनाएँ व बधाई देता हूँ।

रजत जयंती शुभकामना संदेश

यतीश भोगीलाल मेहता
निदेशक, डायद्रेंड्स

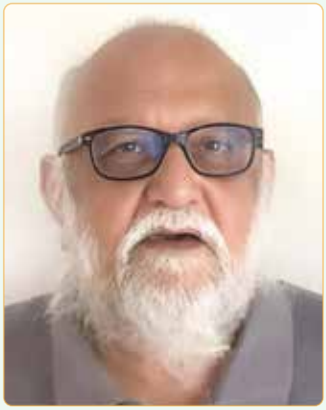

मानव जीवन विकास समिति कटनी, मध्यप्रदेश, के काम को चंद शब्दों में कहना बहुत ही कठिन है। निर्भय भाई के बारे में कुछ भी कहना वह ओर भी मेरे लिए चेलेंजिग है। फिर भी दिलोजान से कहता हूँ कि उनके जैसा अति ईमानदार, मेहनती और सब कार्यकर्ताओं तथा जो भी इंसान उनसे मिलता है वो तुरंत उनके परिवार का बन जाता है। MJVS के इतने बढ़िया समाज सेवा के निःस्वार्थ काम है कि गिनाने को बैठूँ तो कितने काग़ज़ लेने पड़ेंगे उसकी गिनती करना असंभव है। MJVS को बहुत तरक़्क़ी मिले और संगठन का नाम उनके ज़रिये इतिहास में लिखा जाये यही उम्मीद करते हुए विराम लेता हूँ।

मुझे ख़ुशी है कि मानव जीवन विकास समिति अपने 25 वर्षों में बड़ी चुनौतियों का सामना करते हुए अच्छे काम के प्रति स्थानीय और राष्ट्रीय स्तर पर पहचान स्थापित की है। समिति पिछड़े व अंतिम छोर के व्यक्तियों तक लाभ पहुँचाने और हज़ारों लोगों की स्थाई आजीविका सुनिश्चित करने में अहम भूमिका निभाई है। समिति शिक्षा, स्वस्थ, आजीविका और आर्थिक सशक्तिकरण के मुद्दे पर जोर दिया है और अपने उद्देश्यों को पूरा करने में निरंतर रचनात्मक कार्यों के साथ आगे बढ़ रही है। इस विकास कार्य में लगी पूरी टीम को 25 वी वर्षगांठ की हार्दिक शुभकामनाएँ व बधाई।

शुभकामनाओं के साथ,
शोभा तिवारी

मानव जीवन विकास समिति - 25 वर्ष

मानव जीवन विकास समिति को स्थापना के 25 सफल वर्षों पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ। समिति ने पिछले वर्षों में सामाजिक जागरूकता, शिक्षा, स्वास्थ्य तथा मानव विकास के क्षेत्र में जो कार्य किए हैं, वे प्रशंसनीय और प्रेरणादायी हैं।

रजत जयंती का यह अवसर समिति के समर्पण, सेवा और निरंतर प्रगति की उज्ज्वल पहचान है। आगामी वर्षों में समिति इसी उत्साह और संकल्प के साथ समाजहित में नई ऊँचाइयाँ प्राप्त करे—यही शुभकामनाएँ।

हार्दिक अभिनंदन
संतोष सिंह

अत्यंत ही हर्ष का विषय है कि मानव जीवन विकास समिति अपने 25 वर्ष पूर्ण कर रजत जयंती मना रही है। यह कटनी जैसे छोटे जिले की संस्था स्थानीय, राज्य स्तर, राष्ट्रीय स्तर एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सामाजिक सरोकारों को प्राप्त करने एवं वंचितों को शासन की योजनाओं का लाभ पहुँचने का काम बख़ूबी कर रही है।

गांधी दर्शन पर आधारित यह संस्था अपने कार्यों के द्वारा अहिंसक अर्थव्यवस्था को मज़बूत करने में महत्वपूर्ण योगदान दे रही है

आशा है यह आगे भी अपने लक्ष्यो को प्राप्त करती रहेगी। शुभकामनाएँ
मोहनदास नागवानी
सदस्य
मानव जीवन विकास समिति

09 मीडीया कवरेज

मानव जीवन विकास समिति के प्रभावशाली कार्य को व्यापक मीडिया कवरेज मिला है, जिससे जागरूकता बढ़ी और कई मंचों पर सकारात्मक ग्रामीण विकास की कहानियाँ प्रदर्शित हुई हैं।

01 प्रिंट और डिजिटल मीडिया

एमजेवीएस के कार्यक्रम और सफलता की कहानियाँ राष्ट्रीय और स्थानीय समाचार पत्रों, ऑनलाइन समाचार पोर्टलों और सोशल मीडिया पेजों पर प्रकाशित हुई हैं, जिनमें जैविक खेती, ग्रामीण पर्यटन और सामाजिक सशक्तिकरण जैसे कार्यक्रमों की उपलब्धियों पर प्रकाश डाला गया है।

02 रेडियो और टेलीविजन

क्षेत्रीय टीवी चैनलों और रेडियो स्टेशनों पर प्रसारित वृत्तचित्रों और साक्षात्कारों ने ग्रामीण आवाज़ों को बुलंद किया है और एमजेवीएस समुदायों के नेतृत्व में बदलाव की यात्राओं को प्रदर्शित किया है।

03 सोशल मीडिया पर उपस्थिति

एमजेवीएस सक्रिय रूप से सोशल मीडिया अकाउंट बनाए रखता है, रीयल-टाइम अपडेट, इवेंट कवरेज, समय-समय पर शैक्षणिक सामग्री और सफलता की कहानियों को शेयर किया जाता है और व्यापक दर्शकों एवं संभावित भागीदारों के साथ जुड़ता है।

मीडिया में उपस्तिथि के प्रभाव

- ग्रामीण विकास की चुनौतियों और समाधानों के बारे में जनता और हितधारकों की जागरूकता में वृद्धि।
- नीति निर्माताओं और वित्तपोषकों के बीच एमजेवीएस की पहलों के लिए विश्वसनीयता और समर्थन में वृद्धि।
- सार्वजनिक मान्यता के माध्यम से समुदाय के गौरव और प्रेरणा में वृद्धि।
- स्वयंसेवकों का आकर्षण, डोनर्स की रुचि और सहयोग के अवसर।

बालिका शिक्षा और पोषण की गुणवत्ता के लिए होंगे प्रयास

ग्रामीणों के साथ रहकर हमारी संस्कृति से रूबरू हो रहे फ्रांसीसी नागरिक

किसानों ने पहली बार की अश्वगंधा की खेती, प्राकृतिक खेती की ओर रुख

विदेशी मेहमानों की मौजूदगी में पहले स्वदेशी होमस्टे का हुआ शुभारंभ

22 हजार किसानों में समिति ने फूंका आर्गेनिक फूड का मंत्र

नईदुनिया

दीवाल लेखन कर और नाले व तालाब की खोदाई और सफाई कर दिया गया जल संरक्षण का संदेश

सुरक्षित वातावरण बनाने में विलेजर्स की भूमिका अहम

पत्रिका

जैविक सब्जी उत्पादन से सुधरी आशा की आर्थिक दशा

जैव संसाधन केंद्र और बीज बैंकों से जिले के 8000 किसानों को मिलेगा लाभ

भूमिका भास्कर

बायो रिसोर्स सेंटर मानव जीवन विकास समिति ने तेंदूखेड़ा और जबेरा ब्लाकों में महिला समूहों के द्वारा तैयार कि जा रही है जैविक दवाईयां

मानव जीवन विकास समिति परिसर विजौरी में रोपे 25 फलदार पौधे

मिलेट मिशन प्रोजेक्ट पर अभिनव पहल: प्रदर्शित कराए ज्वार-बाजरे के पकवान

भूमि और जल संरक्षण के लिए किया जा रहा जागरूक

आदिवासी समाज ने मनाया जनजातीय गौरव दिवस

ग्रामीण क्षेत्र की समस्याओं को लेकर किया विचार-मंथन

Greeting every tourist with a smile

जैविक कीटनाशक अग्निअस्त्र, नीमास्त्र और जीवामृत बनाने का दिया प्रशिक्षण

22 हजार किसानों में समिति ने फूंका आर्गेनिक फूड का मंत्र

7 दैनिक मध्यप्रदेश

सेफ क्लिक अभियान: सोशल मीडिया उपयोगकर्ताओं को सतर्क रहने की जरुरत

आभार

सरकारी विभाग

जिला, राज्य और केंद्र स्तर के कृषि विभाग, उद्यानिकी विभाग, आदिम जाति कल्याण विभाग, पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग, महिला एवं बालविकास विभाग, पशुपालन विभाग, मत्स्य पालन विभाग, राजस्व विभाग, पर्यटन विभाग, पर्यावरण विभाग द्वारा सतत सहयोग हमें मिलता रहा है।

अंतरराष्ट्रीय एजेंसियाँ

ऐसी एजेंसियों से हमें लगातार सहयोग और वित्तपोषण मिलता रहा है जो स्थायी कृषि, स्थायी आजीविका. प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन और सामुदायिक एकजुटता को बढ़ावा देती है।

गैर-सरकारी संगठन

क्षमता निर्माण एवं नेतृत्व विकास के लिए स्थानीय, क्षेत्रीय और राष्ट्रीय स्तर पर गैर सरकारी संगठनों का सहयोग हमें मिलता रहा है।

सामुदायिक स्वयंसेवक

जमीनी स्तर के स्वयंसेवक जो समर्पित भाव से जुड़े एमजेवीएस की रीढ़ है, उनकी मदद के बिना यह उपलब्धियाँ अधूरी है।

कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (सीएसआर) पहल

ग्रामीण आजीविका कार्यक्रमों और कौशल विकास का समर्थन करने वाली कंपनियों से योगदान भी उल्लेखनीय है।

धन्यवाद

हम सब मानव जीवन विकास समिति के स्थापना दिवस पर एकत्र हुए हैं। यह समिति समाज में शिक्षा, स्वास्थ्य और जागरूकता फैलाने का कार्य करती है। स्थापना दिवस हमें याद दिलाता है कि छोटे-छोटे प्रयास मिलकर बड़े बदलाव ला सकते हैं। समिति ने लोगों के जीवन को बेहतर बनाने में जो योगदान दिया है, वह सराहनीय है। हम सबका कर्तव्य है कि इस मिशन को आगे बढ़ाएँ और समाज में सकारात्मक ऊर्जा फैलाएँ। आइए मिलकर संकल्प लें कि हम विकास और सेवा की इस यात्रा को निरंतर जारी रखेंगे।

बद्रीनारायण नरडिया
अध्यक्ष
मानव जीवन विकास समित

सभी वार्षिक वित्तीय रिपोर्ट हमारी वेबसाइट पर अपलोड की जाती हैं। आप इस QR कोड को स्कैन करके देख सकते हैं

प्रकाशक
मानव जीवन विकास समिति

Website- www.mjvs.org

LinkedIn- Manav Jeevan Vikas Samiti

Twitter- @mjvs_katni_mp

Instagram- @manavjeevanvikassamiti

Facebook - Manav Jeevan Vikas Samiti

YouTube- @manavjeevanvikassamiti-mjv3583

Email- mjvs@mjvs.org, mjvskatni@gmail.com

सम्पर्क

निर्भय सिंह – सचिव, एमजेवीएस

पता- मानव जीवन विकास समिति, ग्राम बिजौरी, पोस्ट मझगवां (बरही रोड), जिला कटनी, मध्य प्रदेश – 483501

टेलीफ़ोन- 07626 275223, 275206